मूल्य : 20/-

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

वर्ष : ५

जुलाई : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७

अंक : १

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

मंगल पांडे
जयंती : 19 जुलाई

चंद्र शेखर आजाद
जयंती : 23 जुलाई

बाल गंगाधर तिलक
जयंती : 23 जुलाई

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

रामप्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर थे : आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार - पेज-5

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

प्रेस से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हों विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : आर्य समाज में बढ़ती...	2
2.	मानव जीवन का उद्देश्य	3
3.	अमर बलिदानी बिस्मिल	4
4.	बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर थे	5
5.	रामप्रसाद बिस्मिल जी के जीवन...	6-7
6.	आत्मा की उन्नति के बिना...	8-9
7.	गोवंश की वास्तविक उपयोगिता	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	कारगिल विजय दिवस...	14
10.	आजादी के मतवालों के ताप में...	16
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : सजग रहें...कोलेस्ट्रॉल	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

आर्य समाज में बढ़ती विकृतियां

मैं बहुत पीड़ा में हूं यह देखकर कि आर्य समाज से जुड़ा हुआ व्यक्ति अपने आपको गर्व से आर्य कहता था, वह अब अपने आपको आर्य कहने में संकोच करता हुआ नजर आता है। इसके विपरीत वह वैदिक परम्पराओं के स्थान पर व सत्य सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर सड़ी-गली पौराणिक परम्पराओं को सनातन परम्परा बताने का प्रयास अक्सर आर्य समाज के मंचों से करता है। लोकेषणा के ज्वर से पीड़ित कुछ सामान्य विद्वान एवं वक्ता आर्य समाज के मंचों से हिन्दुत्व के एजेंड़ों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

बहुत सारी हिन्दुत्ववादी संस्थाएं कमजोर मानसिकता वाले आर्य समाज के कटु प्रचारकों पर डोरे डालती हैं, उनके प्रवचन अपने में संगठन कराकर फिर उनके माध्यम से आर्य समाज में प्रवेश कर जाते हैं तथा आर्य समाज को विकृत करने का प्रयास कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि अंधविश्वासी पाखंडी का वाणी मात्र से भी स्वागत न करें, किंतु इस बात का ध्यान हम बिल्कुल भी नहीं रखते।

आर्य समाज के मंचों से पाखंडियों का खूब महिमा मंडन होता है। वहीं सिद्धांतवादी विद्वानों की अवमानना से मैं ये मानता हूं कि हम सब हिन्दू कहलाए किंतु महर्षि दयानन्द के पुरुषार्थ एवं कृपा से हम अपने प्राचीन स्वरूप को पहचान पाये। यदि अब भी हम स्वार्थ के वशीभूत होकर हिन्दू-हिन्दू करते हैं तो फिर यह हमारा दुर्भाग्य होगा। हिन्दुत्व को लेकर फेंकने वाले दिग्भ्रमित आर्यों से पूछना चाहता हूं कि कलकत्ता के काली मंदिर में यज्ञोपवीत धारण करके तथाकथित विद्वान बकरों को काटते हैं और रोज एक बकरे की बलि दी जाती है, क्या आप ऐसा बनना चाहते हैं? ऐसे अनेकों सवाल जिनका जवाब ये लोग दे नहीं पाएंगे। इसीलिए अपनी सिद्धांतप्रियता को बनाये रखिए और **गर्व से कहिए हम आर्य हैं। हमारा धर्मग्रंथ वेद है।**

हम मूर्तिपूजक नहीं, सर्वशक्तिमान ईश्वर की आराधना करते हैं। हमारा जयघोष हर-हर महादेव नहीं अपितु 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' है। जागिए, समझिए और आर्य सिद्धांतों की रक्षा कीजिए।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

वैदिक परम्पराओं के स्थान पर व सत्य सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर सड़ी-गली पौराणिक परम्पराओं को सनातन परम्परा बताने का प्रयास अक्सर आर्य समाज के मंचों से करता है। लोकेषणा के ज्वर से पीड़ित कुछ सामान्य विद्वान एवं वक्ता आर्य समाज के मंचों से हिन्दुत्व के एजेंड़ों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। बहुत सारी हिन्दुत्ववादी संस्थाएं कमजोर मानसिकता वाले आर्य समाज के कटु प्रचारकों पर डोरे डालती हैं, उनके प्रवचन अपने में संगठन कराकर फिर उनके माध्यम से आर्य समाज में प्रवेश कर जाते हैं तथा आर्य समाज को विकृत करने का प्रयास कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि अंधविश्वासी पाखंडी का वाणी मात्र से भी स्वागत न करें, किंतु इस बात का ध्यान हम बिल्कुल भी नहीं रखते। आर्य समाज के मंचों से पाखंडियों का खूब महिमा मंडन होता है। वहीं सिद्धांतवादी विद्वानों की अवमानना से मैं ये मानता हूं कि हम सब हिन्दू कहलाए किंतु महर्षि दयानन्द के पुरुषार्थ एवं कृपा से हम अपने प्राचीन स्वरूप को पहचान पाये। यदि अब भी हम स्वार्थ के वशीभूत होकर हिन्दू-हिन्दू करते हैं तो फिर यह हमारा दुर्भाग्य होगा। हिन्दुत्व को लेकर फेंकने वाले दिग्भ्रमित आर्यों से पूछना चाहता हूं कि कलकत्ता के काली मंदिर में यज्ञोपवीत धारण करके तथाकथित विद्वान बकरों को काटते हैं और रोज एक बकरे की बलि दी जाती है, क्या आप ऐसा बनना चाहते हैं? ऐसे अनेकों सवाल जिनका जवाब ये लोग दे नहीं पाएंगे। इसीलिए अपनी सिद्धांतप्रियता को बनाये रखिए और गर्व से कहिए हम आर्य हैं। हमारा धर्मग्रंथ वेद है। हम मूर्तिपूजक नहीं, सर्वशक्तिमान ईश्वर की आराधना करते हैं। हमारा जयघोष हर-हर महादेव नहीं अपितु 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' है। जागिए, समझिए और आर्य सिद्धांतों की रक्षा कीजिए।

मानव जीवन का उद्देश्य

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

हमारे मन में कई प्रकार के विचार जीवन को लेकर उठते हैं, जीवन क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? अंतिम सार क्या है? जो जीवन मिला है किसलिए मिला है। सबसे पहले तो कहें कि जन्म और मृत्यु के काल को जीवन कहा जाता है। इस काल में हमें यह जानना आवश्यक है कि वह परमेश्वर कौन है, कैसा है व क्या करता है? उसके नाम पर बड़ी अनभिज्ञताएं हैं, परमात्मा ने संसार क्यों बनाया है? मनुष्य को जीवन क्यों दिया, बहुत सारे प्रश्न उठते हैं।

परमात्मा को लेकर संसार में बहुत से विवाद हैं? प्रश्न बहुत हो सकते हैं, अन्तर भी बहुत हो सकते हैं, पर अध्यात्म के जगत में वे ही प्रवेश कर पाते हैं, जो परि प्रश्न हो जाते हैं। परि प्रश्न के द्वारा ही उसे जाना जा सकता है, समझा जा सकता है। परि प्रश्न नाम है जिज्ञासा का अर्थात् जानने की तीव्र इच्छा! श्रद्धा से परिपूर्ण जिज्ञासा का नाम है परि प्रश्न कि किससे पूछें, किससे परि प्रश्न करें, किससे जिज्ञासा करें? क्योंकि प्रारम्भ पूछना ही होता है और जिससे पूछते हैं, जिज्ञासा करते हैं, उसे ही गुरु कहा गया है, उसे ही आचार्य कहा गया है। पर वह गुरु, वह आचार्य तत्वदर्शी हो, श्रोत्रिय हो, ब्रह्मनिष्ठ हो। तद् विज्ञानार्थं स गुरुं एवं अहभगच्छे समित्पाणि-श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् - मुण्डकोपनिषद 1.2.12 कहा भी है, अर्थात्- उसे जानने के लिए, वह जिज्ञासु श्रोता शिष्य बनकर अपने हाथ में समिधा लेकर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाय। सत्संग, आध्यात्मिक संगोष्ठियां ऐसे जिज्ञासुओं के लिये विकल्प स्वरूप हैं। इसलिए सत्संगों, अध्यात्म सभाओं में हम शिष्य बनकर पहुंचें, समित्पाणि होकर पहुंचे अर्थात जिज्ञासु होकर पहुंचे। समित्पाणि होना सर्मपण और सेवा का प्रतीक है। तीन समिधाएं- तन-मन व आत्म समर्पण ये तीन समिधाएं हैं जिन्हें प्रतीक स्वरूप शिष्य गुरु को समर्पित करता है। आत्म शिष्य का श्रद्धावान, तत्परायण और संयमी होना आवश्यक है और योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में भी लिखते हैं- श्रद्धावान, लभते ज्ञानं तत्पर: सतेन्द्रिय: गीता- 4-39

हम तब उसे जान पाते हैं, जो देवों का देव है, जो वसुओं का वसु है, जो अदभुत मित्र है, जो सच्चिदानन्द स्वरुप परमात्मा है। ये जिन्दगी उसी की है, जो प्रभु का हो गया...। यदि हम स्वयं पात्र बनकर पहुचेंगे तो उसे प्राप्त किए बिना वापस नहीं लोटेंगे, उसे जाने बिना नहीं रहेगें क्योंकि जीवन का सार यही है हम उस परमपिता परमात्मा को पालें और वह हमें मिल जाए। यही मानव जीवन का उद्देश्य है।

ईश्वर की सच्ची प्रार्थना से हमारा अंर्तमन खुश होता है। ईश्वर से प्रीति लगाना ही अंतिम सत्य है। क्योंकि मोक्ष पाने का एक मार्ग यही है। ब्रह्म की प्राप्ति ही जीव का परमलक्ष्य है। ब्रह्म सर्वत्र परिपूर्ण है उसी में जीव आनन्दपूर्वक गति से सर्वत्र विचरता है तो उस स्थिति को मोक्ष कहते हैं। जब शुद्ध मन युक्त पांच ज्ञानेन्द्रियं जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का स्थिर निश्चय होता है, उसको मोक्ष कहते हैं।

मोक्ष प्राप्त करने के लिए जीवात्मा अपने शुभ कर्मों द्वारा ऐश्वर्य के संचय के लिए मनुष्य योनी में आता है। सत्यभाषण, परोपकार, सत्यज्ञान, उपासना द्वारा मानसिक रूप से परमात्मा के समीप रहना, उसी से प्रकाश और प्रेरणा लेकर सब कार्य करना आदि कार्यों से जीव मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक पूंजी संग्रह करने में समर्थ होकर अपने चरम और परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। परमेश्वर की प्राप्ति से जीव को जो असीम आनन्द प्राप्त होता है, वही सचमुच स्वर्ग है। मोक्ष की स्थिति में ही यह स्वर्ग जीव को प्राप्त होता है। मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि वह धर्म ज्ञान, विद्या द्वारा अपने आप आत्मा को जाने, पुन: परमात्मा की प्रेरणा प्रकाश में रहते रहते और तद्नुसार आचरण व्यवहार करने से निश्चित रूप से मोक्ष की प्राप्ति होगी। शुभ कर्मों की पूंजी ही हमें मोक्ष प्राप्त करा सकती है। आत्मा और परमात्मा के मिलन में किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं है। विवेक से भोगों में छिपे दु:ख को जानकर, उन से वैराग्य, वैराग्य से मन की एकाग्रता, एकाग्रता से सत्य, सत्य से समाधि, समाधि से ईश्वर का साक्षात्कार, ईश्वर दर्शन से अज्ञान-अविद्या का नाश, जिससे दु:खों की समाप्ति फिर पूर्ण स्थाई सुख व मुक्ति की प्राप्ति होती है।

अमर बलिदानी बिस्मिल

रामप्रसाद बिस्मिल बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुंदर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेना अध्यक्ष होते। आपको पूरे काकोरी षडयंत्र का नेता माना गया है। बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पंडित जगत नारायण जैसे सरकारी वकील की सुध-बुध भुला देते थे।

चीफ़ कोर्ट की अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे की जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान व योग्य व्यक्ति का हाथ है। 19 तारीख की शाम आपको फांसी दी गयी। 18 की शाम को जब आपको दूध दिया गया, तो आपने यह कहकर इंकार कर दिया कि अब मैं मां का दूध ही पियूंगा। 18 को आपकी मां से मुलाकात हुई।

मां से मिलते ही आपकी आंखों से अश्रु बह चले। मां बहुत हिम्मत वाली देवी थी। आपसे कहने लगी- हरिश्चंद्र, दधिची आदि बुजुर्गों की तरह वीरता, धर्म वह देश के लिए जान दे, चिंता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हंस पड़े। कहां! मां मुझे क्या चिंता और पछतावा, मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता लेकिन मां! लेकिन मां आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा मेरा संबंध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आंखों में अश्रु उमर पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूं। फांसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहां 'वन्दे मातरम' 'भारत माता की जय' और शांति से चलते हुए कहां-

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही रहे
बाकि न मैं रहूं, न मेरी आरजू रहे
जब तक की तन में जान रगों में लहूं रहे
तेरी ही जिक्र-ए-यार, तेरी जुस्तजू रहे!

फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहां-मैं ब्रिटिश राज्य का पतन चाहता हूं। फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मंत्र पढ़ना शुरू किया। रस्सी खींची गई। रामप्रसाद जी फांसी पर लटक गए। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि उसका कसूर यही था की वह हलम देश में जन्म लेकर भी बड़ा भरी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था।

आपको मैनपुरी षड्यंत्र ने नेताश्री गेंदालाल दीक्षित जैसे शूरवीर ने विशेष तौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमे के समय आप भाग कर नेपाल चले गए थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का एक बड़ा कारण हो गयी। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भरी जुलूस निकला गया। स्वदेश प्रेम में आपकी माता नें कहां- 'मैं अपने पुत्र की मृत्यु पर प्रसन्न हूं, दु:खी नहीं। मैं श्री रामचंद्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो श्री रामचंद्र की जय।'

इत्र-फुलेल और फूलों की वर्षा के बीच उनकी उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फेकें। 11 बजे आपकी लाश शमशान भूमि पहुंची और अंतिम क्रिया समाप्त हुई। आपके पत्र का आखिरी हिस्सा आपकी सेवा में प्रस्तुत है- 'मैं खूब सुखी हूं। 19 तारीख को प्रात: जो होना है उसके लिए तैयार हूं। परमात्मा काफ़ी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूंगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पंडित जगतनारायण (सरकारी वकील जिसने इन्हें फांसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अंतिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपए से चैन की नींद आये। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।'

रामप्रसाद की सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गयी। फांसी से दो दिन पहले से सी.आई.डी. के मिस्टर हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो। आपको पांच हज़ार रुपया नकद दे दिया जायेगा और सरकारी खर्च पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जाएगी। लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करने वाले थे। आप हुकूमतों को ठुकराने वाले व कभी कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुक़दमे के दिनों में आपसे जज ने पूछा था, आपके पास क्या डिग्री हैं? तो आपने हंसकर जवाब दिया 'सम्राट बनने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।'

वीर भगत सिंह

123वें जन्मोत्सव पर पं. रामप्रसाद बिस्मिल को कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि

बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर थे : आचार्य डॉ. जयेन्द्र

बिस्मिल का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत : राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

नोएडा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल का 123वां जन्मोत्सव ऑनलाइन सौल्लास मनाया गया।

आर्ष गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने कहा कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर रहे, उनसे प्रेरणा पाकर अनेकों स्वतंत्रता-आंदोलन से जुड़े। अशफाक उल्ला ख़ां और बिस्मिल की दोस्ती जगजाहिर थी एक कट्टर आर्य समाजी और एक कट्टर मुस्लिम, लेकिन राष्ट्र की बलिवेदी पर दोनों इकट्ठे फांसी पर झूल गए इससे बड़ा सामाजिक समरसता का कोई ओर उदाहरण नहीं हो सकता। बिस्मिल ने देश की आजादी के लिए घर, परिवार सब छोड़कर राष्ट्र के लिए सब कुछ होम कर दिया।

एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा के निदेशक आनन्द चौहान ने कहा कि बिस्मिल की जीवनी पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते है, वास्तव में उनके जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में पढ़ाने की आवश्यकता है जिससे नयी पीढ़ी उनके बलिदान से परिचित हो सके।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों को इतिहास से विस्मृत करने का षड्यंत्र किया गया और एक ही परिवार की पूजा-अर्चना की गई, 'उनकी तुर्बत पे नहीं एक भी दिया, जिनके खून से जले थे चिरागे वतन। आज महकते हैं मकबरे उनके जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।' अनिल आर्य ने जोर देकर कहा कि यदि आजादी की रक्षा करनी है तो नई पीढ़ी को उनके त्याग, समर्पण, बलिदान से परिचित करवाना ही होगा, नौजवानों को बिस्मिल की फांसी से तीन दिन पहले लिखी आत्मकथा अवश्य पढ़नी चाहिए।

राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र की वर्तमान व भावी पीढ़ी को देश भक्त बनाने, स्वतंत्रता के महत्व को समझने तथा राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन राष्ट्रभक्त शहीदों क्रांतिकारियों का जीवन चरित्र शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए हंसते-हंसते अपना जीवन बलिदान कर दिया। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के जन्मदिवस पर आर्य समाज व केंद्रीय आर्य युवक परिषद की सरकार से यह ही पुरजोर मांग है।

प्रांतीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आज के दौर में देश के युवाओं में बिस्मिल जैसे शहीदों का जीवन नयी ऊर्जा भरने का कार्य करेगा। पंडित राम प्रसाद बिस्मिल एक महान् क्रांतिकारी, देशभक्त ही नहीं बल्कि एक उच्च कोटि के लेखक, कवि, शायर व साहित्यकार भी थे। इनकी लिखी हुई समस्त रचनाएं बहुत ही जोशीली, क्रांतिकारी होती थी देशभक्ति भावना से ओतप्रोत इस अमर बलिदानी का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में हुआ था। प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने उनके जीवन को अपने जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प्रवीन आर्या, कैप्टन अशोक गुलाटी (नोएडा), संगीता आर्या, विजय चौधरी के ओजस्वी गीतों ने उत्साह पैदा किया। प्रमुख रूप से राजेश मेंहदीरत्ता, धर्मपाल आर्य, विजय आर्य (मुंबई), ईश आर्य (हिसार), यशोवीर आर्य, डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा, ओम सपरा, अरुण आर्य, प्रेम सचदेवा एवं वीना वोहरा आदि उपस्थित रहे।

रामप्रसाद बिस्मिल जी के जीवन के कुछ संस्मरण

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी का जन्म उत्तर प्रदेश में स्थित शाहजहांपुर में 11 जून 1897 ई. को हुआ था। इनके पिता का नाम मुरलीधर तथा माता का नाम मूलमती था। इनके घर की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी। बालकपन से ही इन्हें गाय पालने का बड़ा शौक था। बाल्यकाल में बड़े उद्दंड थे। पांचवी में दो बार अनुत्तीर्ण हुए। थोड़े दिनों बाद घर से चोरी भी करने लगे तथा

उन पैसों से गंदे उपन्यास खरीदकर पढ़ा करते थे, भांग भी पीने लगे। रोज़ाना 40-50 सिगरेट पीते थे। एक दिन भांग पीकर संदूक से पैसे निकाल रहे थे, नशे में होने के कारण संदूक खटक गई। माता जी ने पकड़ लिया व चाबी पकड़ी गई। बहुत से रुपये व उपन्यास इनकी संदूक से निकले। किताबों से निकले उपन्यासादि उसी समय फाड़ डाले गए व बहुत दंड मिला। (परमात्मा की कृपा से मेरी चोरी पकड़ ली गई, नहीं तो दो-चार साल में न दीन का रहता न दुनिया का-आत्मचरित्र) परंतु विधि की लीला और ही थी। एक दिन शाहजहांपुर में आर्यसमाज के एक बड़े संन्यासी स्वामी सोमदेव जी आए। बिस्मिल जी का उनके पास आना-जाना होने लगा। इनके जीवन ने पलटा खाया, बिस्मिल जी आर्यसमाजी बन गए और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी की लिखी पुस्तक तवारीखे हिन्द को पढ़कर बिस्मिल जी बहुत प्रभावित हुए। पं. रामप्रसाद ने प्रतिज्ञा की कि ब्रिटिश सरकार से क्रांतिकारियों पर हो रहे अत्याचार का बदला लेकर रहूंगा।

गुरु कौन था : फांसी से पूर्व बिस्मिल जी नित्य जेल में वैदिक हवन करते थे। उनके चेहरे पर प्रसन्नता व संतोष देखकर जेलर ने पूछा की तुम्हारा गुरु कौन है? बिस्मिल जी ने कहा कि जिस दिन उसे फांसी दी जाएगी, उस दिन वह अपने गुरु का नाम बताएगा, और हुआ भी ऐसा ही। फांसी देते समय जेलर ने जब अपनी बात याद दिलाई तो बिस्मिल जी ने कहा कि मेरे गुरु हैं महर्षि स्वामी दयानन्द।

आर्य समाज के कट्टर अनुयायी और पिता से विवाद : स्वामी दयानन्द जी की बातों का राम प्रसाद पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि ये आर्य समाज के सिद्धान्तों को पूरी तरह से अनुसरण करने लगे और आर्य समाज के कट्टर अनुयायी बन गये। इन्होंने आर्य समाज द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भाग लेना शुरू कर दिया। इन सम्मेलनों में जो भी संन्यासी महात्मा आते रामप्रसाद उनके प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनकर उन्हें अपनाने की पूरी कोशिश करते।

बिस्मिल का परिवार सनातन धर्म में पूर्ण आस्था रखता था और इनके पिता कट्टर पौराणिक थे। उन्हें किसी बाहर वाले व्यक्ति से इनके आर्य समाजी होने का पता चला तो उन्होंने खुद को बड़ा अपमानित महसूस किया। क्योंकि वो रामप्रसाद के आर्य समाजी होने से पूरी तरह से अनजान थे। अत: घर आकर उन्होंने इनसे आर्य समाज छोड़ देने का लिये कहा। लेकिन बिस्मिल ने अपने पिता की बात मानने के स्थान पर उन्हें उल्टे समझाना शुरू कर दिया। अपने पुत्र को इस तरह बहस करते देख वो स्वयं को और अपमानित महसूस करने लगे। उन्होंने क्रोध में भर कर इनसे कहा-'या तो आर्य समाज छोड़ दो या मेरा घर छोड़ दो।'

इस पर बिस्मिल ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हुये घर छोड़ने का निश्चय किया और अपने पिता के पैर छूकर उसी समय घर छोड़कर चले गये। इनका शहर में कोई परिचित नहीं था जहां ये कुछ समय के लिये रह सके, इसलिये ये जंगल की ओर चले गये। वहीं इन्होंने एक दिन और एक रात व्यतीत की। इन्होंने नदी में नहाकर पूजा-अर्चना की। जब इन्हें भूख लगी तो खेत से हरे चने तोड़कर खा लिये।

दूसरी तरफ इनके घर से इस तरह चले जाने पर घर में सभी परेशान हो गये। मुरलीधर को भी गुस्सा शांत होने पर अपनी गलती का अहसास हुआ और इन्हें खोजने में लग गये। दूसरे दिन शाम के समय जब ये आर्य समाज मंदिर पर स्वामी अखिलानंद जी का प्रवचन सुन रहे थे इनके पिता दो व्यक्तियों के साथ वहां गये और इन्हें घर ले आये। तब से उनके पिता ने उनके क्रांतिकारी विचारों का विरोध करना बंद कर दिया।

फांसी का दिन : 19 दिसम्बर को फांसी वाले दिन प्रात: 3 बजे बिस्मिल जी उठते है। शौच, स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ किया। फिर ईश्वर स्तुति करके वंदेमातरम् तथा भारत माता की जय कहते हुए वे फांसी के तख्ते के

निकट गए। तत्पश्चात् उन्होंने कहा- 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं।' फिर पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी तख्ते पर चढ़े और 'विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि...' वेद मंत्र का जाप करते हुए फंदे से झूल गए।

ऐसी शानदार मौत लाखों में दो-चार को ही प्राप्त हो सकती है। स्वातंत्र्य वीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी के इस महान बलिदान ने भारत की आजादी की क्रांति को और तेज कर दिया। बाद में चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव जैसे हजारों देशभक्तों ने उनकी लिखी अमर रचना 'सरफ़रोशी की तमन्ना' गाते हुए अपने बलिदान दिये।

पं रामप्रसाद बिस्मिल आदर्श राष्ट्रभक्त तथा क्रांतिकारी साहित्यकार के रूप में हमेशा अमर रहेंगे। दुखद है आज भारत के आधिकांश लोगो ने उन्हें और उनके प्रेरणा स्रोत दोनों को भूला दिया है।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल को शत्-शत् नमन!!

उम्मीद-ए- सुखन

कभी तो कामयाबी पर मेरा हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा।

चखायेंगे मज़ा बर्बादि-ए-गुलशन का गुलचीं को।
बहार आयेगी उस दिन जब ये अपना बागवां होगा।

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है?
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तहां होगा।

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे-वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा।

ये आये-दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खंजरे-कातिल।
बता कब फैसला उनके-हमारे दरमियां होगा।

शहीदों की चिताओं पर जुडेंगे हर बसर मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज देखेंगे।
कि जब 'बिस्मिल' ज़मीं अपनी और अपना आसमा होगा।

देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

देश धर्म की भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

राणा सांगा ने बाबर को, नाकों चने चबाए।
महाराणा प्रताप, शिवाजी, मुगलों से टकराए॥

तेग बहादुर, गोविन्द सिंह ने, दुष्टों को मुंह मारा।
बंदा वैरागी, नलवा को, मान गया जग सारा॥

दुर्गा रानी, किरण मई थीं, देश भक्त क्षत्राणी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

जगत गुरु ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी न घबराया॥

तात्या टोपे, तुकाराम, नाना को साथ लगाया।
वीर कुंवर सिंह, नाहर सिंह ने, भारी युद्ध मचाया॥

लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से, खूब लड़ी मर्दानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

वीर सुभाष चंद्र ने था, गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया॥

विस्मिल, शेख, भगत सिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम, अशफाक वीर ने, हंसकर फांसी खाई॥

मत भूलो, लंदन में उधम की पिस्तौल चलानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

वीरों के बलिदानों से ही यह आजादी आई।
'भारत वीर सपूतों ने थी, कठिन मुसीबत पाई॥

आजादी का महत्व समझाओ, सभी बहिन अरु भाई।
मिलजुल करके रहना सीखो, इसमें सभी भलाई॥

देश भक्त बलवान बनो तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

बनो सदाचारी, तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी संगति त्यागो प्यारो, जग में आदर पाओ॥

वैदिक धर्मी बनो, देश भारत की शान बढ़ाओ।
'नंदलाल' तुम आजादी के, मधुर तराने गाओ॥

करो देश का ध्यान छोड़ दो करनी तुम मनमानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

पं. नन्दलाल 'निर्भय' पलवल

आत्मा की उन्नति के बिना सामाजिक तथा देशोन्नति सम्भव नहीं

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य मननशील प्राणी को कहते हैं। मनन का अर्थ सत्यासत्य का विचार करना होता है। सत्यासत्य के विचार करने की सामर्थ्य मनुष्य को विद्या व ज्ञान की प्राप्ति से होती है। विद्या व ज्ञान प्राप्ति के लिये बाल्यावस्था में किसी आचार्य से किसी पाठशाला, गुरुकुल या विद्यालय में अध्ययन करना होता है। विद्या प्राप्ति के लिये सच्चे ज्ञानी आचार्यों व विद्वानों की संगति तथा उपदेश ग्रहण भी आवश्यक है। सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन ही मनुष्यों को विद्वान बनाता है।

विद्या प्राप्ति के इन उपायों को करके ही मनुष्य सत्यासत्य विषयों का चिन्तन व मनन कर सकता है। सत्यासत्य को जानना ही मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य नहीं है अपितु सत्यासत्य को जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना भी मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य सिद्ध होता है। जो मनुष्य विद्वान हैं परन्तु सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग नहीं करते, वह मनुष्यवेश में मनुष्य नहीं अपितु देश व समाज सहित अपने भी शत्रु सिद्ध होते हैं। असत्य को छोड़े बिना मनुष्य की उन्नति नहीं होती। इसी प्रकार से सत्य को जानना, उसका ग्रहण व आचरण करना भी मनुष्य का कर्तव्य है। जो मनुष्य ऐसा करते हैं वह वस्तुतः मनुष्य होने के साथ उत्तम कोटि के मनुष्य जिसे देव कहते हैं, होते हैं। सत्य का ग्रहण मनुष्य को देव, विद्वान, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, देशभक्त, समाज का मित्र व हितैषी, अपना व अपने परिवार सहित मानव जाति का उद्धारक व सुधारक बनाता है। परमात्मा ने मनुष्य को मनुष्य जन्म अपनी आत्मा की उन्नति करते हुए श्रेष्ठ कार्यों को करने के लिये दिया है। जो मनुष्य अपने जीवन में ज्ञान प्राप्ति, ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, मातृ-पितृ-आचार्यों की सेवा तथा समाज के हित के कार्य नहीं करते, वह सभ्य पुरुष, उत्तम नागरिक तथा सदाचारी मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं होते। अतः विद्या की प्राप्ति सहित सत्यासत्य का विचार कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य सिद्ध होता है।

माता-पिता का कर्तव्य होता है कि वह अपनी सन्तानों के लिये योग्य आचार्यों व गुरुओं की तलाश करें तथा उन्हीं से उनको विद्या व ज्ञान की प्राप्ति करायें। सभी आचार्य व विद्वान समान नहीं होते और न ही सभी बालक व विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति की दृष्टि से समान होते हैं। आचार्यों का विद्वान होने के साथ सदाचारी होना भी आवश्यक होता है। विद्वान तथा सदाचारी आचार्य व आचार्याएं ही अपने विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति के साथ उनका आचरण शुद्ध व श्रेष्ठ बनाने में सहायक होते हैं। इसके साथ ही मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति

विद्या व ज्ञान प्राप्ति के लिये बाल्यावस्था में किसी आचार्य से किसी पाठशाला, गुरुकुल या विद्यालय में अध्ययन करना होता है। विद्या प्राप्ति के लिये सच्चे ज्ञानी आचार्यों व विद्वानों की संगति तथा उपदेश ग्रहण भी आवश्यक है। सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन ही मनुष्यों को विद्वान बनाता है। विद्या प्राप्ति के इन उपायों को करके ही मनुष्य सत्यासत्य विषयों का चिन्तन व मनन कर सकता है। सत्यासत्य को जानना ही मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य नहीं है अपितु सत्यासत्य को जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना भी मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य सिद्ध होता है। जो मनुष्य विद्वान हैं परन्तु सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग नहीं करते, वह मनुष्यवेश में मनुष्य नहीं अपितु देश व समाज सहित अपने भी शत्रु सिद्ध होते हैं। असत्य को छोड़े बिना मनुष्य की उन्नति नहीं होती। इसी प्रकार से सत्य को जानना, उसका ग्रहण व आचरण करना भी मनुष्य का कर्तव्य है। जो मनुष्य ऐसा करते हैं वह वस्तुतः मनुष्य होने के साथ उत्तम कोटि के मनुष्य जिसे देव कहते हैं, होते हैं। सत्य का ग्रहण मनुष्य को देव, विद्वान, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, देशभक्त, समाज का मित्र व हितैषी, अपना व अपने परिवार सहित मानव जाति का उद्धारक व सुधारक बनाता है।

एवं आत्मा की उन्नति में वेद, ऋषियों के बनाये शास्त्रीय ग्रंथ उपनिषद व दर्शन आदि सहित वैदिक विद्वानों के अनेक विषयों के ग्रंथ भी स्वाध्याय के लिये उत्तम होते हैं। ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज सहित पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी का जीवन चरित आदि ग्रन्थ भी मनुष्य जाति की विद्या वृद्धि सहित चरित्र निर्माण में सहायक हैं। इनके माध्यम से मनुष्य सत्यासत्य को जानकर अपने जीवन को उच्च आदर्शों से युक्त कर अपनी आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति कर सकते हैं। जिस देश में ऐसे ज्ञानी व सच्चरित्र नागरिक होंगे वह देश निश्चय ही एक आदर्श देश होगा।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए जब हम अपने देश की शिक्षा व्यवस्था तथा प्रचलित नियमों को देखते हैं तो हमें निराशा मिलती है। हमारे देश में सत्य विद्या के ग्रन्थ वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि को शिक्षा व्यवस्था वा पाठ्यक्रम में सम्मिलित ही नहीं किया गया है। यह स्थिति नीति निर्धारकों की अज्ञानता, उनका किसी विशेष विचारधारा का होना, उनके राजनीतिक स्वार्थ तथा वेद विरोधी विचारधाराओं का होना ही विदित होता है। इसी कारण देश सामाजिक दृष्टि से समरस होने के स्थान पर विषमताओं से भर गया है। चरित्र व नैतिकता की बात करना ही अप्रांसगिक बना दिया गया है। देश के नेतागण व उच्च शिक्षित लोग ही भ्रष्टाचार व चरित्र हनन के अनैतिक कार्य करते हुए अधिक दिखाई देते हैं। समाज में सबके लिये समान नियम व कानून तक नहीं है। यह भेदभाव पूर्ण दृष्टि देश व समाज को कमजोर करती है। अत: पूरी व्यवस्था एवं नियमों की समीक्षा का यह उपयुक्त समय है।

कुछ राजनीतिक व साम्प्रदायिक विचारधारा के लोग अपने स्वार्थों के कारण इसका विरोध करेंगे परन्तु यदि इस काम को अब नहीं किया गया तो आने वाले समय में यह असम्भव हो जायेगा। सत्य व जनहित के कार्यों का विरोध करने वालों की शक्ति निरंतर वृद्धि को प्राप्त हो रही है। आने वाले समय में मनुष्य की देश व समाज हित में बोलने व लिखने की आजादी भी समाप्त होने की पूरी सम्भावना है। आज भी यह आजादी कुछ सीमा तक ही है। यदि बड़े अपराधियों के विरुद्ध कोई पत्रकार व देशभक्त कुछ कहता है तो उसे अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है। बहुत से लोगों की तो हत्या तक कर दी जाती है।

हमारी यह सृष्टि एक परमात्मा के द्वारा सृष्ट, रचित व संचालित है। सभी मनुष्य आदि प्राणियों को एक ही ईश्वर व सृष्टिकर्ता ने उत्पन्न किया है। ईश्वर सर्वशक्तिमान व न्यायकारी है। उसका न्याय ऐसा है जिसे देश के लोग मुख्यत: मत-मतान्तरों के लोग न तो जानते व समझते हैं और न ही मानते हैं। ईश्वर की जो आज्ञायें व नियम वेद में दिये गये हैं, उसका मत-मतान्तरों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से विरोध देखा जाता है। ऐसा इसलिये भी होता है कि ईश्वर सूक्ष्म, अदृश्य, अगोचर, निराकार तथा सर्वव्यापक सत्ता है। मनुष्य ईश्वर व आत्मा के ज्ञान की अपेक्षा से अज्ञानी है। अत: वह पाप व पुण्य का विचार न कर अपने हित व स्वार्थ के अनुरूप काम करते हैं। वह जब रोगी व कष्टों में होते हैं तो उसका चिकित्सकों आदि से उपचार व समाधान कराते हैं।

कुछ ठीक होकर अपने पुराने तौर तरीकों से जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर देते हैं तथा कुछ मध्य में ही कालकवलित हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण अज्ञानता होता है। आश्चर्य तो यह होता है कि उन लोगों के मत के आचार्य भी उनका सही मार्गदर्शन नहीं करते। वह उन्हें ईश्वर व आत्मा के सच्चे स्वरूप से परिचित नहीं कराते।

प्रेरक वचन

- परमेश्वर सर्वज्ञ होने से सब लोक व काल की व्यवस्था को जानता है, वैसे ही मनुष्यों को सब लोक तथा काल की महिमा को जानकर एक क्षण भी व्यर्थ नहीं खोना चाहिए।
- मनुष्यों को एक अद्वितीय परमेश्वर की उपासना ही से संतुष्ट रहना चाहिए, क्योंकि विद्वान लोग परमेश्वर के स्थान में अन्य वस्तु को उपासना भाव से स्वीकार नहीं करते।
- हमारे पूर्वज जब रोटी पकाते थे तो संन्यासी, उपदेशक या अतिथि को भोजन कराते थे। जिस दिन अतिथि-सेवा करते थे, उस दिन कहते थे कि हमने पवित्र खाना खाया है, हमारा चौका सफल हुआ।

गोवंश की वास्तविक उपयोगकिता

आचार्य ओमकार शास्त्री
उपाचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

गौवंश अर्थात् गाय का वंश, गाय हमारी माता है यह वास्तविक यथार्थ है। माता तीन हैं- गौमाता, जननी, मातृभूमि। इसके अलावा किसी अन्य का स्थान नहीं आता है। गौमाता ही बच्चे के पालन-पोषण में सबसे ज्यादा सहायक होती हैं। जब शिशु की मां के स्तनों में दूध नहीं आता तो गाय के दूध से ही बच्चे का पोषण होता है। ये पोषण गाय या जननी के दूध से ही होता है। इसलिए कहा जाता है- गांवों विश्वस्य मातरा अर्थात् गाय विश्व की माता है।

आज समस्त धरा पर गाय की बहुत दुर्दशा हो रही है। कहीं काटी जा रही है तो कहीं घायल होकर घूम रही हैं। जिसको हम माता कहते हैं, यदि वह इस प्रकार अपमानित होती रहेगी तो देश हमेशा दुखी रहेगा और समाज तथा राष्ट्र में अशांति फैलेगी। वर्तमान समय में गाय के नाम पर लोग धंधे कर रहे हैं। गौ रक्षा का नाद बजाने वाले गौवंश को कटवा रहे हैं और अपने आपको कृष्ण और राम का वंशज बताते हैं। उन्हें पता नही है योगेश्वर कृष्ण के यहां दस हजार गाय पलती थीं। उन्हें सबसे ज्यादा मक्खन, दूध, दही से प्रेम था। इसलिए उन्होंने पूर्ण निष्ठा और प्रेम से गौवंश की सेवा की। इसलिए लोग उन्हें ग्वाला भी कहते थे। श्रीकृष्ण ने गाय के गोबर और गौमूत्र को अमृत और औषधीय गुणों से ओतप्रोत बताया।

गाय के वास्तविक स्वरूप की हम बात करें तो हमारे वैज्ञानिक भी कहते हैं कि गाय एकमात्र ऐसा प्राणी है जो ऑक्सीजन ही ग्रहण करता है और ऑक्सीजन ही छोड़ता है। जबकि अन्य प्राणी ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और कार्बनडाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। गौमूत्र का सेवन करने से कैंसर जैसी भयंकर बीमारी से निजात मिल जाती है।

गौवंश की रक्षा करना हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। जो गाय घास, तृण, पत्ते, फल आदि खाकर, दूध आदि अमृतरूपी रत्न देती हैं उनको पापी लोग काट देते हैं। ऐसे लोगों को कभी सुख और आनंद की प्राप्ति नहीं होती है। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अधन्या: यजमानस्य पशुन पाहि' अर्थात् हे पुरुष तू इन पशुओं को कभी मत मार, इनकी रक्षा कर जिससे तेरी भी रक्षा हो सके। इससे यह सिद्ध होता है कि गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।

गाय के गोवर की खाद से भूमि को पोषक तत्व प्राप्त होते हैं जिससे भूमि की उर्बरा शक्ति में वृद्धि पौष्टिक एवं स्वादिष्ट अन्न, फल व सब्जियां प्राप्त होती हैं। जबसे भारतीय कृषि में रासायनिक खाद का प्रयोग हुआ है, खाद्यान्न की गुणवत्ता, पौष्टिकता एवं स्वाद में भारी कमी आई है और बीमारियां बढ़ रही है। कीटनाशक विष भूमि में व्याप्त होकर अपना प्रभाव कई वर्षों तक रखता है। यह विष पानी के साथ मिलकर पृथ्वीतल के नीचे जल के स्रोतों तक पहुंच जाता है इसके कारण पेयजल भी विषयुक्त मिल रहा है।

विचारणीय विषय है कि गौरक्षा, गौपालन, कैसे हो। इसके लिए हमारी सरकार को ठोस कदम उठाने होंगे और किसान को गौवंश का उपयोग खेती में करना पड़ेगा तभी गौवंश की रक्षा, होगी। यदि हमारी सरकार गाय के गोबर और गौमूत्र को खरीदना प्रारम्भ कर दे और गाय के गोबर से देशी खाद का निर्माण करे तो कृषि और किसान दोनों ही समृद्ध होंगे और शुद्ध आर्गेनिक (जैविक) खेती से अच्छी उन्नत पुष्टिकारक पैदावार होगा और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होगा। बीमारियां कम होंगी, सभी बलवान होंगे और किसान खुशहाल होंगे। इससे ही उन्नत और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। आओ सभी गौरक्षा का संकल्प लें और गौपालन में सहयोग करें।

गौमूत्र का सेवन करसे से कैंसर जैसी भयंकर बीमारी से निजात मिल जाता है। गौवंश की रक्षा करना हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। जो गाय घास, तृण, पत्ते, फल आदि खाकर, दूध आदि अमृतरूपी रत्न देते हैं उनको पापी लोग काट देते हैं। ऐसे लोगों को कभी सुख और आनंद की प्राप्ति नहीं होती है। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अधन्याः यजमानस्य पशुन पाहि' अर्थात् हे पुरुष तू इन पशुओं को कभी मत मार, इनकी रक्षा कर जिससे तेरी भी रक्षा हो सके। इससे यह सिद्ध होता है कि गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।

कर्मण्येवाधिमारस्ते...

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

मानवशरीरे पञ्च कर्मेंद्रियाणि मनोबुद्धि एतानि द्वादशेन्द्रियाणि सन्ति। इमानि अहर्निशं कर्म कुर्वन्ति क्षणमात्रमपि न विरमन्ति। यदि इमानि स्वकार्य क्षणमपि विरमेयु:, तदा मनुष्यस्य प्राणिमात्रस्य वा का दशा भवेदिति कल्पनीयमेव। इमानि कदापि अभीप्सितस्य लाभस्य कामनया कार्यं न कुर्वन्ति, अपि तु स्वभावतया एव। तथैव मनुष्योऽपि परिणामस्य चिंतां विनैव स्वकर्मानुष्ठानं विधत्ते।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

किंतु लोके सर्वेपि जना: फलं विचिन्त्यैव कार्ये प्रसत्ता: दृश्यन्ते। तत्र केचन फलावाप्तौ विघ्नान् विचिंत्य कार्यमेव न प्रारभन्ते, अपरे कार्य प्रारभ्य मध्ये आपतन्तं दृष्ट्वा भयेन विरमन्ति, किंतु ये साहसिका: धीरा: सन्ति, ते बारं बारं विघ्नेन प्रतिहन्यमाना अपि स्वकार्य न त्यजन्ति। एवमिमां सुवर्णपुष्पां पृथ्वीं चिन्वन्ति। उक्तञ्च-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै:।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:॥

श्रीमद्भगवद्गीतायाम् श्रीकृष्णेन प्राधान्येन कर्म एव उपदिष्ट:। संन्यासविषये श्रीकृष्णस्य मतमासीत् यत् कर्मणां न्यास: संन्यास इति। नहि मनुष्य: कर्म बिना क्षणमपि स्थातुं शक्नोति। अत: काम्यकर्मणां त्याग एव वरम्। यज्ञदानतप: प्रभृति कार्याणि मनुष्यस्य सहजस्वभावजानि पावनानि सन्ति। एषां त्याग: कदापि न कार्यम् चतुर्णां वर्णानां स्वभावजं कर्म विवृण्वन् गीतायां कथितम्-

शमो दमस्तप: शोचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाऽत्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रकर्म स्वभावजम्।
कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्॥

अत: स्वभावजानां कर्मणां त्यागो न समीचीनम्। गीतायां कर्मकौशलमेव योग इति प्रोक्तम्। ज्ञानकर्मणो: कतमो ज्यायात्रिति जिज्ञासायां ज्ञानेन तथा योगिनां कर्मणा मुक्ति:। तत्रापि यत्र ज्ञानमार्गे सर्वकर्म्मणां न्यास:, संन्यास:, संन्यासादभीष्टसिद्धिरिति विविक्तं तद्दूषितमेव:, यत: कश्चिदपि कर्म विना तिष्ठति। यदि स्वेच्छया न करोति, तदा प्रकृतिजै: गुणै: अवश: सन् कर्म करोति। कर्म बिना-

यज्ञाधात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधन:।
तदर्थं कर्म कौन्तेय! मुक्तसङ्ग: समाचार॥

कर्मयोगी एव समाजस्यादर्शभूत: नेता भवति। स एव समाजे सुव्यवस्थां शान्तिं समृद्धिञ्चानयति। आत्मज्ञानेन कर्मयोगिना य: पथ: निर्दिश्यते, इतरे जना: तमेवानुकुर्वन्ति, सोऽसंलोकसङ्ग्रहोऽसदपि सत्करोति एतादृशे परोपकारनिष्ठे कर्मयोग एव सत्पुषाणां सर्वोत्तम: स्वार्थ:।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **आर्यावर्त :** हिमालय, विंध्याचल, सिंधु नदी और ब्रह्मपुत्र नदी इन चारोंके बीच में जहां तक उनका विस्तार है, उनके मध्य में जो देश है, उसका नाम 'आर्यावर्त' है।
- **दस्यु :** अनार्य अर्थात् जो अनाड़ी आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू, चोर, हिंसक कि जो दुष्ट मनुष्य है वह 'दस्यु' कहाता है।
- **वर्ण :** जो गुण और कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है, वह 'वर्ण' शब्दार्थ से लिया जाता है।
- **वर्ण के भेद :** जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि हैं, वे 'वर्ण' कहाते हैं।
- **आश्रम :** जिनमें अत्यंत परिश्रम करके उत्तम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ काम किये जाएं उनको 'आश्रम' कहते हैं।

स्वामी विवेकानन्द

पुण्य तिथि : 4 जुलाई
शत्-शत् नमन

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता में शिमला पल्लै में 12 जनवरी 1863 को हुआ था और उनकी मृत्यु 4 जुलाई 1902 को हुई थी। वह श्री रामकृष्ण परमहंस के मुख्य अनुयायियों में से एक थे। इनका जन्म से नाम नरेन्द्र दत्त था, जो बाद में रामकृष्ण मिशन के संस्थापक बने। वह भारतीय मूल के व्यक्ति थे, जिन्होंने वेदांत के हिन्दू दर्शन और योग को यूरोप व अमेरिका में परिचित कराया। उन्होंने आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित किया। उनके प्रेरणादायक भाषणों का अभी भी देश के युवाओं द्वारा अनुसरण किया जाता है। उन्होंने 1893 में शिकागो की विश्व धर्म महासभा में हिन्दू धर्म को परिचित कराया था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील, और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। स्वामी विवेकानंद अपने पिता के तर्कपूर्ण मस्तिष्क और माता के धार्मिक स्वभाव से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी माता से आत्मनियंत्रण सीखा और बाद में ध्यान में विशेषज्ञ बन गए। उनका आत्म नियंत्रण वास्तव में आश्चर्यजनक था, जिसका प्रयोग करके वह आसानी से समाधी की स्थिति में प्रवेश कर सकते थे। उन्होंने युवा अवस्था में ही उल्लेखनीय नेतृत्व की गुणवत्ता का विकास किया। वह युवा अवस्था में ब्रह्मसमाज से परिचित होने के बाद श्री रामकृष्ण के सम्पर्क में आए। वह अपने साधु-भाईयों के साथ बोरानगर मठ में रहने लगे। अपने बाद के जीवन में, उन्होंने भारत भ्रमण का निर्णय लिया और जगह-जगह घूमना शुरू कर दिया और त्रिरुवंतपुरम् पहुंच गए, जहां उन्होंने शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय किया। कई स्थानों पर अपने प्रभावी भाषणों और व्याख्यानों को देने के बाद वह पूरे विश्व में लोकप्रिय हो गए। भारत लौटने के बाद उन्होंने 1897 में रामकृष्ण मिशन और मठों, 1899 में मायावती (अल्मोड़ा के पास) में अद्वितीय आश्रम की स्थापना की। आश्रम रामकृष्ण मठ की शाखा था। प्रसिद्ध आरती गीत, खानदान भव बंधन, उनके द्वारा रचित है। एक बार उन्होंने बेलूर मठ में तीन घंटों तक ध्यान किया था। भारत में उनकी ख्याति पहले ही पहुंच चुकी थी। भारतीय अध्यात्मवाद के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। मिशन की सफलता के लिए उन्होंने लगातार श्रम किया, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 4 जुलाई, 1902 ई. को रात्रि के नौ बजे, 39 वर्ष की अल्पायु में 'ओ३म्' ध्वनि के उच्चारण के साथ उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। परंतु उनका संदेश कि 'उठो जागो और तब तक चैन की सांस न लो जब तक भारत समृद्ध न हो जाय'-हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

जयंती : 19 जुलाई
शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी मंगल पांडे

क्रांतिकारी मंगल पांडे का जन्म उत्तरी भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद ग्राम में दिवाकर पांडे के परिवार में हुआ था। जन्म से ही हिंदू धर्म पर उनका बहुत विश्वास था, उनके अनुसार हिंदू धर्म श्रेष्ठ धर्म था। 1849 में पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्मी में शामिल हुए। कहा जाता है की किसी ब्रिगेडियर के द्वारा उनकी आर्मी में भर्ती की गयी थी। 34 बंगाल थलसेना की कंपनी में उन्हें 6ठी कंपनी में शामिल किया गया, मंगल पांडे का ध्येय बहुत ऊंचा था, वे भविष्य में एक बड़ी सफलता हासिल करना चाहते थे। 1850 के मध्य में उन्हें बैरकपुर की रक्षा टुकड़ी में तैनात किया गया। तभी भारत में एक नयी रायफल का निर्माण किया गया और मंगल पांडे चर्बी युक्त हथियारों पर रोक लगाना चाहते थे। ये अफवाह फैल गयी थी कि लोग हथियारों को चिकना बनाने के लिए गाय या सुअर के मांस का उपयोग करते है, जिससे हिंदू और मुस्लिम में फूट पड़ने लगी थी। इतिहास में 29 मार्च 1857 से संबंधित कई दस्तावेज है। लोग ऐसा मानने लगे थे की ब्रिटिश हिन्दुओं और मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट करने में लगे हुए है। मंगल पांडे ने इसका बहुत विरोध किया और इसके खिलाफ वे ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। एक दिन जब नए कारतूस थल सेना को बांटे गये थे तब मंगल पांडे ने उसे लेने से इंकार कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप उनके हथियार छीन लिए जाने व वर्दी उतार लेने का हुक्म हुआ। मंगल पांडे ने ब्रिटिशों के इस आदेश को मानने से इंकार कर दिया और उनकी रायफल छिनने के लिए आगे बढ़े, अंग्रेज अफसर पर उन्होंने आक्रमण कर दिया। यह अकेले एक ऐसे भारतीय सैनिक थे जिन्होंने 29 मार्च 1857 को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। उस समय यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया था। हमले के कुछ समय बाद ही उन्हें फ़ासी की सजा सुनाई गयी और कुछ दिन बाद उन्हें फांसी दे दी गयी। लेकिन फांसी देने के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी उनके पार्थिव शरीर के पास जाने से भी डर रहे थे।

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

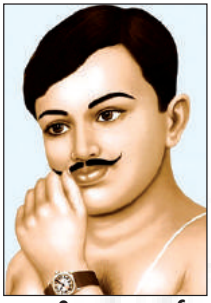

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

काकोरी ट्रेन डकैती और साण्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ। भील बालकों के साथ रहते-रहते चन्द्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं। इसलिए उन्हें संस्कृत सीखने के लिए विद्यापीठ, बनारस भेजा गया। दिसम्बर 1921 में जब गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन की शुरुआत की गयी इस समय मात्र चौहद वर्ष की उम्र में चंद्रशेखर आजाद ने इस आंदोलन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया। जब चन्द्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम 'स्वतंत्रता' बताया। यहीं से चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चन्द्रशेखर आजाद पड़ गया था। चंद्रशेखर को पंद्रह दिनों के कड़े कारावास की सजा दी गयी। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया। इस घटना ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया। एक युवा क्रांतिकारी प्रनवेश चैटर्जी ने उन्हें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे क्रांतिकारी दल के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल से मिलवाया। आजाद इस दल और बिस्मिल और बिस्मिल के, 'समान स्वतंत्रता और बिना किसी भेदभाव के सभी को अधिकार' जैसे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। चन्द्रशेखर आजाद के समर्पण और निष्ठा की पहचान करने के बाद बिस्मिल ने चन्द्रशेखर आजाद को अपनी संस्था का सक्रिय सदस्य बना दिया। अंग्रेजी सरकार के धन को चोरी और डकैती जैसे कार्यो को अंजाम देकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथियों के साथ संस्था के लिए धन एकत्र करते थे। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद ने अपने साथियों के साथ मिलकर सॉण्डर्स की हत्या भी की थी। आजाद का यह मानना था कि संघर्ष की राह में किसी हिंसा का होना कोई बड़ी बात नहीं है। जलियांवाला बाग जैसे अमानवीय घटनाक्रम जिसमें हजारों निहत्थे और बेगुनाहों पर गोलियां बरसाई गई, ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया जिसके बाद उन्होंने हिंसा को ही अपना मार्ग बना लिया।

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक, स्वराज्य की मांग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरि जिले के चिकल गांव तालुका में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र पंत व माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। कहते हैं कि इनकी माता पार्वती बाई ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पूरे अश्विन महीने में निर्जला व्रत रखकर सूर्य की उपासना की थी, इसके बाद तिलक का जन्म हुआ था। इनके जन्म के समय इनकी माता बहुत दुर्बल हो गयी थी। जन्म के काफी समय बाद ये दोनों स्वस्थ्य हुये। बाल गंगाधर तिलक के बचपन का नाम केशव था और यही नाम इनके दादा जी (रामचन्द्र पंत) के पिता का भी था इसलिये परिवार में सब इन्हें बलवंत या बाल कहते थे, अत: इनका नाम बाल गंगाधर पड़ा। इनका बाल्यकाल रत्नागिरि में व्यतीत हुआ। बचपन में इन्हें कहानी सुनने का बहुत शौक था इसलिये जब भी समय मिलता ये अपने दादाजी के पास चले जाते और उनसे कहानी सुनते। दादाजी इन्हें रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, गुरुनानक आदि देशभक्तों और क्रांतिकारियों की कहानी सुनाते थे। तिलक बड़े ध्यान से उनकी कहानियों को सुनकर प्रेरणा लेते। इन्हें अपने दादाजी से ही बहुत छोटी सी उम्र में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सीख मिली। इस तरह प्रारम्भ में ही इनके विचारों का रुख क्रांतिकारी हो गया और ये अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे। तिलक का जन्म एक सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका परिवार चितापावन वंश से संबंधित था जो सभी धार्मिक नियमों और परंपराओं का कट्टरता से पालन करते थे। इनके पिता, गंगाधर रामचन्दन पंत रत्नागिरि में सहायक अध्यापक थे। इनके पिता अपने समय के लोकप्रिय शिक्षक थे। गंगाधर रामचन्दन पंत ने त्रिकोणमिति और व्याकरण पर अनेक पुस्तकें लिखी जो प्रकाशित भी हुई। इनकी माता, पार्वती बाई धार्मिक विचारों वाली महिला थी। इनके दादा जी स्वंय महाविद्वान थे। उन्होंने बाल को बचपन में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं और देशभक्ति की शिक्षा दी। अपने परिवार से बाल्यकाल में मिले संस्कारों की छाप तिलक के भावी जीवन में साफ दिखाई पड़ती हैं। तिलक के पिता ने घर पर ही इन्हें संस्कृत का अध्ययन कराया। जब बाल तीन साल के थे तब से ये प्रतिदिन संस्कृत का श्लोक याद करके एक पाई रिश्वत के रूप में लेते थे। पांच वर्ष के होने तक इन्होंने बहुत कुछ सीख लिया था।

कारगिल विजय दिवस

26 जुलाई पर विशेष

कारगिल विजय दिवस स्वतंत्र भारत के लिये एक महत्वपूर्ण दिवस है। इसे हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है। कारगिल युद्ध लगभग 60 दिनों तक चला और 26 जुलाई को उसका अंत हुआ। इसमें भारत की विजय हुई। इस दिन कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के सम्मान हेतु मनाया जाता है।

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद भी कई सैन्य संघर्ष होता रहा। दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण के कारण तनाव और बढ़ गया था। स्थिति को शांत करने के लिए दोनों देशों ने फरवरी 1999 में लाहौर में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। जिसमें कश्मीर मुद्दे को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का वादा किया गया था। लेकिन

पाकिस्तान ने अपने सैनिकों और अर्ध-सैनिक बलों को छिपाकर नियंत्रण रेखा के पार भेजने लगा और इस घुसपैठ का नाम 'ऑपरेशन बद्र' रखा था। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर और लद्दाख के बीच की कड़ी को तोड़ना और भारतीय सेना को सियाचिन ग्लेशियर से हटाना था। पाकिस्तान यह भी मानता है कि इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के तनाव से कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने में मदद मिलेगी।

प्रारम्भ में इसे घुसपैठ मान लिया था और दावा किया गया कि इन्हें कुछ ही दिनों में बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन नियंत्रण रेखा में खोज के बाद और इन घुसपैठियों के नियोजित रणनीति में अंतर का पता चलने के बाद भारतीय सेना को अहसास हो गया कि हमले की योजना बहुत बड़े पैमाने पर किया गया है। इसके बाद भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय नाम से 2,00,000 सैनिकों को भेजा। यह युद्ध आधिकारिक रूप से 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ। इस युद्ध के दौरान 527 सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया।

सभी देशवासियों को 'कारगिल विजय दिवस' की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अमर शहीदों के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !!

जरा याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आये.....!!!!

26 जुलाई 1999 का दिन भारत वर्ष के लिए एक ऐसा गौरव लेकर आया, जब हमने सम्पूर्ण विश्व के सामने अपनी विजय का बिगुल बजाया था। इस दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में '26 जुलाई' अब हर वर्ष 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

दिल में हौसलों का तेज और, तूफ़ान लिए फिरते हैं।
आसमां से ऊंची हम अपनी, उड़ान लिए फिरते हैं।।

वक्त क्या आजमाएगा, हमारे जोश और जूनून को।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमसे महफ़ूज़ सरहदे है, हमसे रोशन ये चमन।
हमसे खुशियों कि बारातें, और कायम चैनों अमन।।

हम वतन के पहरेदार... दुश्मनों के लिए दीवार ....
सर पे कफ़न होंठों पे भवानी, नाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमारी वतन परस्ती, चंद रुपयों की मोहताज नहीं।
खरीद सके जो ईमान को, कोई ऐसा तख्तों ताज नहीं।।
हम भारत मां के वीर सपूत... सैन्य शक्ति के अग्रदूत....
अपनी बन्दूखों में दुश्मनों का, अंजाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

मात देते अपने साहस से, दुश्मन की हरेक चाल को।
तिलक करते अपने लहू से, भारत मां के भाल को।।

है अदम्य साहस का प्रकाश...नहीं किसी तमगे की आस,
अपनी शहादत पर भी सैकडों, सलाम लिए फिरते हैं।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

भक्तराज अमींचन्द जी

अमींचन्द्र जी
पुण्यतिथि : 29 जुलाई

पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान में) के झेलम जनपद ने भारतभूमि व मानव-समाज को समय-समय पर कई महान विभूतियां देकर इतिहास में नये-नये अध्याय जोड़े हैं। बहुत पुराने समय की बात यदि हम न करें तो भी इसी युग में इसी झेलम जनपद ने सत्यनिष्ठ, वेदप्रिय, वीर-विप्र, रक्तसाक्षी पं. लेखरामजी को जन्म दिया। इसी धरती ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वीर योद्धा हुतात्मा खुशीराम को जन्म दिया। वीर खुशीराम ने अंग्रेजी साम्राज्य से जुझते हुए सीने पर सात गोलियां खाकर वीरगति पाई। इसी झेलम की धरती ने प्रखर क्रांतिकारी भाई बालमुकंद को जन्म दिया। सती माता रामरखी इसी धरती की देन थी। भाई परमानंद को जन्म देने का अभिमान भी इसी झेलम जनपद को है।

इन पुण्यात्माओं के अतिरिक्त इस क्षेत्र ने एक और नररत्न को जन्म दिया। वे थे श्री अमींचन्द जी। आपका जन्म झेलम जिले की पिंडदादनखां तहसील के हिरणपुर ग्राम में हुआ। आप मोहियाल कुल में जन्मे। आपका गोत्र बाली था। मोहियाल ब्राह्मण बहुत बीर होते हैं। सैनिक स्वभाव के यो लोग सेना व पुलिस में ऊंचे-ऊंचे पदों को सुशोभित करते आए हैं। ये लोग सुशिक्षित व बुद्धिमान भी बहुत होते हैं। अमींचन्द जी को बाल्यकाल से ही संगीत में विशेष रुचि रही। इस कारण इनका संगत बिगड़ गयी। मीरासियों व वेश्याओं की संगत से इनमें वे सब दोष आ गये जो मनुष्य को पतनोन्मुख कर देते हैं। आचार्य चमूपति जी ने भक्त जी की संक्षिप्त जीवनी में ठीक ही लिखा है- गानविद्या पर यह दैव का अत्याचार है कि यह विद्या दुराचारियों के हाथ जा पड़ी है। अमींचन्द गान रस का रसिया था। यही रस उसे दुराचारियों में ले गया और उनमें ऐसा फंसाया कि वहीं तन्मय कर दिया। मांस खाता, मद्य गीता और दिन-रात दुर्व्यसनियों को कुसंगति में रहता। उस युग में पंजाब में उर्दू का ही बोलबाला था। अमींचन्द भी उर्दू-फारसी के अच्छे ज्ञाता थे, परंतु उनके भजनों से यह पता चलता है कि उन्हें हिंदी का भी अच्छा ज्ञान था। संस्कृत का भी कुछ अध्ययन किया।

ये चुंगी के दरोगा बने और फिर स्थानापन्न तहसीलदार की पदवी प्राप्त हुई। उस काल के भारतीयों के लिए इस पद पर पहुंच जाना बड़ा सम्मानास्पद था। एक सेठ के गुमाशते से मिलकर वस्तुआं का अनुचित भाव लिख दिया। इससे उस गुमाशते को बहुत अधिक राशि मिलने की सम्भावना थी। ये सब कुछ हेरफेर ही तो थी। श्री अमींचन्द जी व तहसीलदार दोनों लपेट में आ गये। आपको त्यागपत्र देना पड़ा। तहसीलदार को तो कारावास का दंड भोगना पड़ा। सेठजी ने अमींचन्द जी को चालीस रुपये की बजाए साठ रुपये मासिक की नौकरी दे दी। धर्मवीर पं. लेखरामजी ने लिखा है कि अमींचन्द ने झेलम में दयानंद जी के उपदेशामृत का पान किया, परंतु आर्यसमाज के इतिहास के एक मर्मज्ञ विद्वान पं. विष्णुदत्त जी एडवोकेट तथा आचार्य चमूपति जी ने लिखा है कि एक डाक्टर अमींचन्द जी को गुजरात ले गये। वहीं आपने ऋषि के दर्शन किये और ऋषि दरबार में भजन गाये। वहां ऋषि जी ने कहा, 'है तो हीरा, परंतु कीचड़ में पड़ा है।' बस ऋषि के इस कृपाकटाक्ष से, इस एक वाक्य में अमींचन्द की काया ही पलट गई। वह आर्यसमाज का सभासद् बन गया।

जीवन परिवर्तन की घटना गुजरात की है। झेलम में अमींचन्द जी की ससुराल थी। उन्होंने वही कुछ भूमि ले ली। वही रहने लगे। दस वर्ष तक वहां आर्यसमाज के विभिन्न पदों को सुशोभित किया। मृत्यु के समय वे आर्यसमाज के प्रधान थे। पहले वे दीन वेदान्ती थे। इसलिए उनके भजनों में कहीं-कहीं संसार की असारता पर अधिक बल दिया गया है। पहले वे गजलें लिखा करते थे, अब भजन लिखने लगे। उनके गले में विशेष रस था। श्रोता उनके सरस भजनों को उन्हीं के मुख से सुनकर भावविभोर होकर झूम उठते थे।

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों पर उनके भजनोंपदेश की तत्कालीन पत्रों के सम्पादकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपनी सर्वसम्पत्ति दान में देने का मृत्यु-पत्र लिख दिया था, परंतु उनकी इस अंतिम इच्छा का पालन नहीं किया गया। 29 जुलाई 1893 को आपका निधन हुआ। समस्त आर्यजगत में आपकी मृत्यु का शोक मनाया गया। आपके जीवन में ऋषिजी के एक ही करुणा-कटाक्ष से जो परिवर्तन आया, वह कल्याण-मार्ग के प्रत्येक पथिक के लिए अत्यंत प्रेरक घटना है।

■■ राजेन्द्र जिज्ञासु

आजादी के मतवालों के ताप में भस्म हुआ था डायर

जलियांवाला बाग में निहत्थों को भूनकर अंग्रेज भारत की आजादी के दीवानों को सबक सिखाना चाहते थे, ताकि वे ब्रितानिया सरकार से टकराने की हिम्मत न कर सकें लेकिन इस घटना ने स्वतंत्रता की चिंगारी को हवा देकर शोला बना दिया और इस बर्बर घटना को अंजाम देने वाला आततायी आजादी के मतवालों के ताप में भस्म हो गया।

1899 में पंजाब में संगरूर जिले के सुनाम गांव में जन्में ऊधम सिंह के सिर से मां-बाप का साया बचपन में ही उठ गया था। उनके जन्म के दो साल बाद 1901 में उनकी मां का निधन हो गया और फिर 1907 में उनके पिता भी चल बसे। मां-बाप के साये से महरूम ऊधम सिंह और उनके बड़े भाई मुक्ता सिंह को अमृतसर के खालसा अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। होनी इतने से ही संतुष्ट नहीं थी। 1917 में उनके भाई का भी निधन हो गया। इस तरह ऊधम सिंह दुनिया के जुल्मों सितम झेलने के लिए बिलकुल तनहा रह गये। इतिहासकार वीरेंद्र शरण के अनुसार ऊधम सिंह इन सब घटनाओं से दुखी तो हुए लेकिन उनकी हिम्मत और संघर्ष करने की ताकत बहुत बढ़ गई। उन्होंने चंद्रशेखर आजादी, राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर ब्रिटिश हुक्मरान को ऐसी चोट दी जिसके निशान यूनियन जैक पर दशकों तक नजर आए।

स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में 1919 का 13 अप्रैल का दिन आंसुओं से लिखा गया है जब अंग्रेजों ने अमृतसर के जलियांवाला बाग में

अमर शहीद ऊधम सिंह
स्मृति दिवस : 31 जुलाई

सभा कर रहे भारतीयों पर अंधाधुंध गोलियां चलाकर सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार दिया। मरने वालों में माताओं के सीने से चिपटे दुधमुंहे बच्चे जीवन की संध्या बेला में देश की आजादी का ख्वाब देख रहे बूढ़े और देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार युवा सभी शामिल थे। इस घटना ने ऊधम सिंह को झकझोर कर लख दिया और उन्होंने अंग्रेजों से इसका बदला लेने की ठानी। हिंदू, मुस्लिम और सिख एकता की नींव रखने वाले ऊधम सिंह उर्फ राम मोहम्मद आजाद सिंह ने इस बर्बर घटना के लिए माइकल ओ. डायर को जिम्मेदार माना जो उस समय पंजाब प्रांत का गवर्नर था। गवर्नर के आदेश पर ब्रिगेडियर जनरल रेजीनल्ड एडबर्ड हैरी डायर ने 90 सैनिकों को लेकर जलियांवाला बाग को चारों तरफ से घेर कर मशीनगनों से गोलियां चलवाई।

ऊधम सिंह ने शपथ ली कि वह माइकल ओ. डायर को मारकर इस घटना का बदला लेंगे। अपने मिशन को अंजाम देने के लिए ऊधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। ऊधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई-बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हॉल में बैठक थी जहां माइकल ओ. डायर भी वक्ताओं में से एक था। ऊधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुंच गए। अपनी रिवाल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवाल्वर के आकार में उस तरह के काट लिया जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए ऊधम सिंह ने माइकल ओ. डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल को लगी जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। गोलीबारी में डायर के दो अन्य साथी घायल हो गये। ऊधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला, अदालत में जब उनसे पूछा गया कि वह डायर के अन्य साथियों को भी मार सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया।

ऊधम सिंह ने जवाब दिया कि वहां पर कई महिलाएं भी थीं और भारतीय संस्कृति में महिलाओं पर हमला करना पाप है। चार जून 1940 को ऊधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई। इस तरह यह क्रांतिकारी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अमर हो गया।

रामप्रसाद बिस्मिल जी व काकोरी के केस पर दुर्लभ जानकारी

रामप्रसाद बिस्मिल काकोरी कांड के मुख्य अभियुक्त थे। इनकी फांसी के बाद इनका परिवार अभावों में रहा। सरकारों ने कोई सुध नहीं ली। परंतु आज हमारे लेख का विषय इनके वकील और सरकारी वकील व नेहरू खानदान से है। पं जगत नारायण मुल्ला– ब्रिटिश सरकार की ओर से सरकारी वकील थे। बिस्मिल और बाकी क्रांतिकारियों को फांसी दिलवाने मे जी जान लगा दिया। 1926 में ब्रिटिश सरकार से काकोरी केस के लिए इन्हें 500 रुपया प्रतिदिन मिलता था।

सेशन कोर्ट के बाद जब ये केस चीफ कोर्ट में गया तब भी सरकारी वकील यही थे। ये पंडित मोती लाल नेहरू के भाई नंदलाल नेहरू के समधी थे। नंदलाल नेहरू के पुत्र किशन लाल नेहरू का विवाह जगत नारायण की पुत्री स्वराजवती मुल्ला से हुआ था। 1916 की लखनऊ कांग्रेस की स्वागत समिति के अध्यक्ष वही थे। लगभग 15 वर्षों तक लखनऊ नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। मांटेग्यू चेम्सफ़ोर्ड सुधारों के बाद उत्तर प्रदेश कौंसिल के सदस्य निर्वाचित हुए और प्रदेश के स्वायत्त शासन विभाग के मंत्री बने। जगत नारायण मुल्ला 3 वर्ष तक वे लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। जीवन का अंतिम समय इन्होंने स्विट्जरलैंड मे बिताया। ये ब्रिटिश के इतने खास थे कि जलियांवाला बाग की जांच के लिए बने हंटर आयोग के सदस्य थे। इनके लड़के आनंद नारायण मुल्ला बाद मे हाईकोर्ट के जज बने। कांग्रेस ने उसे राज्यसभा का सदस्य भी बनाया।

यहां एक और नाम का उल्लेख भी जरूरी है। जवाहर लाल नेहरू के खास गोबिंद वल्लभ पंत। पंत ने क्रांतिकारियों का वकील बनने से इनकार कर दिया क्योंकि उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा दी जाने वाली फीस कम लगी। 1954 में पंत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। उस कुम्भ में ये नेहरू की आवभगत में इतने लीन रहे कि कुम्भ में हैजा फैल गया। सैंकड़ों लोग मर गए। पंत ने लावारिस की तरह उनका सामूहिक दाह संस्कार करवा दिया। सौभाग्य से एक पत्रकार ने उस सामूहिक दाह संस्कार का फोटो ले लिया और यह मामला सार्वजनिक हो गया।

रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथियों को ब्रिटिश सरकार अपना दुश्मन मानती थी। आज से 90 साल पहले ब्रिटिश सरकार ने 3 लाख रुपए खर्च किए थे काकोरी के केस में ताकि बिस्मिल और उनके साथी फांसी पर टंग जाएं। यह वह दौर था 1927 जब क्रांतिकारियों की वकालत करने के लिए कोई तैयार नहीं होता था।

चंद्रभानु गुप्ता का जन्म 14 जुलाई 1902 में अलीगढ़ के बिजौली में हुआ था। उनके पिता हीरालाल थे, वो दौर आर्यसमाज का था। चंद्रभानु इससे जुड़ गये और पूरे जीवन इन्हीं बातों को ले के चलते रहे। आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे, कभी शादी नहीं की। इनकी शुरुआती पढ़ाई लखीमपुर खीरी में हुई। फिर वो लखनऊ चले आए, लॉ पूरा किया और लखनऊ में ही वकालत शुरू कर दी। एक जाने–माने वकील बन गये। चंद्रभानु साइमन कमीशन के विरोध में भी खड़े हुए, जेल गये, पूरे स्वतंत्रता आंदोलन में कुल 10 बार जेल गये। इसी दौरान काकोरी कांड के क्रांतिकारियों के बचाव दल के वकीलों में भी रहे।

1937 के चुनाव में वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गए। फिर स्वतंत्रता के पहले 1946 में बनी पहली प्रदेश सरकार में वो गोविंदबल्लभ पंत के मंत्रिमंडल में पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी के रूप में सम्मिलित हुए। फिर 1948 से 1959 तक उन्होंने कई विभागों के मंत्री के रूप में काम किया।

चंद्रभानु नेहरू के सोशलिज्म से बिलकुल प्रभावित नहीं थे। तो नेहरू इनको पसंद नहीं करते थे। पर यूपी कांग्रेस में चंद्रभानु का इतना प्रभाव था कि विधायक पहले चंद्रभानु के सामने नतमस्तक होते थे, बाद में नेहरू के सामने साष्टांग। 1963 में के.कामराज ने नेहरू को सलाह दी कि कुछ लोगों को छोड़कर सारे कांग्रेस के मुख्यमंत्रियों को रिजाइन कर देना चाहिए। जिससे कि स्टेट सरकारों को फिर से ऑर्गेनाइज किया जा सके। कहा गया कि कुछ दिन के लिए पद छोड़ दीजिए। पार्टी के लिए काम करना है। पर चंद्रभानु की नजर में ये था कि ये सारा गेम इसलिए हो रहा है कि नेहरू जिसको पसंद नहीं करते, वो चला जाए। उन्होंने मना कर दिया। पर इनको समझा लिया गया कि ये कुछ दिनों की बात है। फिर से आपको बना दिया जायेगा मुख्यमंत्री। पर नहीं बनाया गया। इनको हटा कर सुचेता कृपलानी को मुख्यमंत्री बना दिया।

Bismil : A Journey from Poetry, to loot of Treasury to Martyrdom

Article by Dr. Vivek Arya

Ram Prasad Bismil was a freedom fighter, patriot, role model, born leader, philosopher, poet, a reformer and an ardent follower of Swami Dayanand who life was dedicated towards freedom of Motherland. His illustrative contributions to the freedom movement were noted in the Mainpuri Conspiracy of 1918, and the Kakori conspiracy of 1925 against the British rule. His love for motherland, patriotism and revolutionary kind of national spirit were kindled and he started an organization where he had got the incredible chance of leading a team with great freedom fighters including Chandrashekhar Azad, Sukhdev, Bhagat Singh, Ashfaqulla Khan, Govind Prasad, Rajguru, Bhagawati Charan, Premkishan Khanna, Thakur Roshan Singh and Rai Ram Narain.

His early childhood suffered in the hands of poverty. He had to quit his studies to support his family. Later he started visiting Aryasamaj and met Swami Somdev. Swami Somdev inspired him to read Satyarth Prakash, a revolutionary book authored by Swami Dayananda, the founder of Aryasamaj. Ram Prasad influenced by its teachings started practicing strict celibacy as well as controlled diet. He started performing daily Agnihotra and Sandhya. His disciplined life and exercise schedule transformed him into an impressive athlete with great stamina. This was not his stop.

He went ahead with his oratory skills and pen. He assumed his pen name as "Bismil" and authored patriotic poems in Urdu/Hindi and many books. His nationalist poems inspired many. The main inspiration that made him pen his poems were his incomparable love for India, revolutionary spirit and a burning zeal to free India from the foreign rule. He was ever ready to lay down his very life in the altar of the freedom struggle. "Sarfaroshi ki Tamanna" the most famous poem of Indian Freedom was authored by Bismil. Bismil authored his Autobiography while waiting for his hanging sentence in Jail. This is considered one of the finest works in Hindi literature. The autobiography of Ram Prasad Bismil was published under the cover title of Kakori ke shaheed by Ganesh Shankar Vidyarthi in 1928 from Pratap Press, Kanpur.

A rough translation of this book was got prepared by the Criminal Investigation Department of United Province in British India. Translated book was circulated as confidential document for official and police use throughout the country. In jail he came up with song "Mera rang de basanti chola." It became one of the most iconic songs of the pre-Independence era. His other notable literary contributions are Bolshevikon Ki Kartoot A revolutionary noble on Bolshevism, A Sally of the Mind, Swadeshi Rang, Swadhinta ki devi Catherine, Kranti Geetanjali, Deshvasiyon ke nam sandesh (en: A message to my countrymen. He came across Ashfaqullah Khan and both of them became intimate friends despite hailing from different communities. Later in his autobiography, Bismil devotes a huge segment to discuss the friendship he had with Ashfaqullah. In fact, both of them were tried and hanged in different jails on the same day for the same conspiracy.

सोच रहा ऊपर वाला

मंदिर-मस्जिद बंद कराकर
लटका विद्यालय पर ताला।
सरकारों को खूब भा रही
धन बरसाती मधुशाला॥

डिस्टेंसिंग की ऐसी तैसी
लॉकडाउन को धो डाला।
भक्तों के व्याकुल हृदयों पर
रस बरसाती मधुशाला॥

बंद रहेंगे मंदिर मस्ज़िद
खुली रहेंगी मधुशाला।
ये कैसे महामारी है
सोच रहा ऊपरवाला।।

नशा मुक्त हो जाता भारत
तो कैसे चलती मधुशाला
व्यवसाय रुका है उन गरीबों का
जो नोट की जपते थे माला।।

नहीं मिल रहा राशन पानी
मगर मिलेगी मधुशाला।
भाड़ में जाए जनता बेचारी
दर्द में है पीने वाला।।

आपत्ति नहीं जताओ कोई
खुलने दो ये मधुशाला।
कोराना मुक्त होगा भारत
जब ठेके पर चलेंगे त्रिशूल और भाला।।

मेरी विनती है तुम सब से
गर जाए कोई मधुशाला।
वापस ना आने दो उसको
तुम बंद करो घर का ताला।।

दुनिया है बरबाद
और इन्हे चाहिए मधुशाला।
घर में ही रह लो पागल लोगों
ना बचा पाएगा वो रखवाला।।

मंदिर-मस्जिद बंद पड़े हैं
मगर खुलेंगी मधुशाला।
ये कैसे महामारी है
सोच रहा ऊपर वाला।।

➲ **संकलन : आर्ष गुरुकुल , नोएडा**

सरफरोशी की तमन्ना

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजु - ए - कातिल में है

रहबरे - राहे - मुहब्बत रह न जाना राह में
लज़्ज़ते - सहरा - नवर्दी दूरिए - मंज़िल में है

आज मक्तल में ये कातिल कह रहा है बार - बार
अब भला शौके - शहादत भी किसी के दिल में है

वक्त आने दे बताएंगे तुझ ए आसमां !
हम अभी ये क्या बताएं क्या हमारे दिल में है

ए शहीदे - मुल्को - मिल्लत ! हम तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है

अब न अगले वल्वले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले - बिस्मिल में हैं

हसरते - दिल
देखना है किस क़दर दम खंजरे - कातिल में है
अब भी यह अरमान यह हस्रत दिले - बिस्मल में है

गैर के आगे न पूछो इसमें है इस खास राज़
फिर बता देंगे तुझे जो कुछ हमारे दिल में है

खींच कर लायी है हमको कत्ल होने की उम्मीद
आशिकों का आज जमघट कूचए - कातिल में है

फिर रहे चारों तरफ क्यों हाथ में खंजर लिये
आज है यह क्या इरादा आज यह क्या दिल में है

एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत
देखता हूं मैं जिसे वह चुप तेरी महफ़िल में है

उनपे आफत आ गयी यक रोज मर ही जायेंगे
वह तो दुनिया में नहीं जो क़ब्ज़ा - ए - कातिल में है ।।

रावण और बाली वध : कितना सही कितना गलत

कुछ अज्ञानी लोग यह कहते देखे जाते हैं की मर्यादा पुरुषोत्तम राम द्वारा रावण को मारना गलत था क्यूंकि रावण तो अपनी बहन शूर्पनखा का जो अपमान राम और लक्ष्मण ने किया था उसका बदला ले रहा था। रावण तो इस प्रकार से वीर कहलाया जायेगा जिसने अपनी बहन के लिए अपने प्राणों को आहुति दे दी।

सर्वप्रथम तो रावण की बहन का चरित्र संदेह वाला हैं जो वन में किसी अनजान विवाहित पुरुषों पर डोरे डालती हैं। ऐसी महिला को सभ्य समाज में चरित्रहीन ही कहां जायेगा। राम और लक्ष्मण आर्य राजकुमार थे जिनके लिये आर्यमर्यादा का पालन करना सर्वोपरि था इसलिए उन्होंने जब शूर्पनखा का आग्रह ठुकरा दिया तो शूर्पनखा ने उसे अपना अपमान समझा और प्रसिद्ध हिंदी मुहावरा अपमान करने को नाक काटना भी कहते हैं। यह भी गलत प्रचारित कर दिया गया की शूर्पनखा की शारीरिक हानि लक्ष्मण द्वारा की गयी थी। शूर्पनखा राक्षसराज रावण की बहन होने के कारण अहंकारी और दंभी दोनों थी। उसे किसी की भी न सुनने की आदत नहीं थी।

शूर्पनखा के बहकावे में आकार रावण ने सीता का अपहरण कर वेद विरुद्ध कार्य किया। एक ओर रावण द्वारा सीता का अपहरण करना दूसरी ओर वेदों का विद्वान होने में हमें यह संदेश देता हैं की केवल विद्वान होने से ही सब कुछ नहीं होता। उसके लिए आचरण होना भी अत्यंत आवश्यक हैं इसीलिए श्री राम द्वारा रावण वध यह संदेश भी देता हैं की केवल शाब्दिक ज्ञान ही सब कुछ नहीं हैं आचरण सर्वोपरि हैं। हमारे इस कथन का समर्थन स्वयं महाभारत भी इस प्रकार से करती हैं। चारों वेदों का विद्वान , किन्तु चरित्रहीन ब्राह्मण शुद्र से निकृष्ट होता हैं, अग्निहोत्र करने वाला जितेन्द्रिय ही ब्राह्मण कहलाता हैं- महाभारत वन पर्व, यही तर्क बाली पर भी लागू होता हैं। बाली सुग्रीव से ज्यादा बलशाली था और किष्किंधा का राजा था। उसने अपने बल के अहंकार में आकर सुग्रीव को अपने राज्य से निकल दिया और सुग्रीव की पत्नी को अपने महल में बंधक बना लिया। जब भगवान श्री रामचन्द्र जी बाली को मारते हैं तब बाली प्रश्न करता है? दंड देने का अधिकार केवल राजा को है।

श्री राम तब उत्तर देते हैं- हे बाली- वन, पर्वत और सागर सहित यह सारी धरती हम इक्ष्वाकुवंशियों की है। सदा से हम इक्ष्वाकुवंशी इस पर शासन करते हैं। इस समय धर्मात्मा भरत इस पर शासन कर रहे है। उन्हीं के आज्ञानुसार मैंने तुम्हे छोटे भाई की पत्नी को रखने के अपराध में दंडित किया है। कहने को बाली वीर था बलशाली था पर अत्याचारी था। उसके अत्याचार को समाप्त करना आर्य व्यवहार था। जो लोग यह कह कर श्री रामचंद्र जी की निंदा करने का प्रयत्न करते हैं की श्री राम जी ने छुपकर बाली को नहीं मारना चाहिए था वे शास्त्रों ने 'शठे साच्यं समाचरेत' के सिद्धान्त को भूल जाते हैं जिसका अर्थ हैं 'जैसे को तैसा।'

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

अमर बलिदानी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के ब्रह्मचर्य पर विचार

वर्तमान समय में इस देश की कुछ ऐसी दुर्दशा हो रही है कि जितने धनी तथा गणमान्य व्यक्ति हैं उनमें 99 प्रतिशत ऐसे हैं जो अपनी संतान-रूपी अमूल्य धन-राशि को अपने नौकर तथा नौकरानियों के हाथ में सौंप देते हैं। उनकी जैसी इच्छा हो, वे उन्हें बनावें, मध्यम श्रेणी के व्यक्ति भी अपने व्यवसाय तथा नौकरी इत्यादि में फंसे होने के कारण संतान की ओर अधिक ध्यान नहीं दे सकते। सस्ता कामचलाऊ नौकर या नौकरानी रखते हैं और उन्हीं पर बाल-बच्चों का भार सौंप देते हैं, ये नौकर बच्चों को नष्ट करते हैं।

यदि कुछ भगवान की दया हो गई, और बच्चे नौकर-नौकरानियों के हाथ से बच गए तो मुहल्ले की गंदगी से बचना बड़ा कठिन है। रहे-सहे स्कूल में पहुंचकर पारंगत हो जाते हैं। कालेज पहुंचते-पहुंचते आजकल के नवयुवकों के सोलहों संस्कार हो जाते हैं। कालेज में पहुंचकर ये लोग समाचार-पत्रों में दिए औषधियों के विज्ञापन देख-देखकर दवाइयों को मंगा-मंगाकर धन नष्ट करना आरम्भ करते हैं। 95 प्रतिशत की आंखें खराब हो जाती हैं। कुछ को शारीरिक दुर्बलता तथा कुछ को फैशन के विचार से ऐनक लगाने की बुरी आदत पड़ जाती है शायद ही कोई विद्यार्थी ऐसा हो जिसकी प्रेमकथाएं प्रचलित न हों। ऐसी अजीब-अजीब बातें सुनने में आती हैं कि जिनका उल्लेख करने से भी ग्लानि होती है । यदि कोई विद्यार्थी सच्चरित्र बनने का प्रयास भी करता है और स्कूल या कालेज में उसे कुछ अच्छी शिक्षा भी मिल जाती है, तो परिस्थितियां जिनमें उसे निर्वाह करना पड़ता है, उसे सुधरने नहीं देतीं। वे विचारते हैं कि थोड़ा सा जीवन का आनन्द ले लें, यदि कुछ खराबी पैदा हो गई तो दवाई खाकर या पौष्टिक पदार्थों का सेवन करके दूर कर लेंगे। यह उनकी बड़ी भारी भूल है।

मनुष्य-जीवन अभ्यासों का एक समूह है। मनुष्य के मन में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक विचार तथा भाव उत्पन्न होते रहते हैं। क्रिया के बार-बार होने से उसमें ऐच्छिक भाव निकल जाता है और उसमें तात्कालिक प्रेरणा उत्पन्न हो जाती है। इन तात्कालिक प्रेरक क्रियाओं की, जो पुनरावृत्ति का फल है, 'अभ्यास' कहते हैं। मानवी चरित्र इन्हीं अभ्यासों द्वारा बनता है। अभ्यास से तात्पर्य आदत, स्वभाव, बान है।

अंग्रेजी की कहावत है "Only for one and for ever." तात्पर्य यह है कि कि यदि एक समय कोई बात पैदा हुई, मानो सदा के लिए रास्ता खुल गया। दवाईयां कोई लाभ नहीं पहुंचाती। अंडों का जूस, मछली के तेल, मांस आदि पदार्थ भी व्यर्थ सिद्ध होते हैं। सबसे आवश्यक बात चरित्र सुधारना ही होती है। विद्यार्थियों तथा उनके अध्यापकों को उचित है कि वे देश की दुर्दशा पर दया करके अपने चरित्र को सुधारने का प्रयत्न करें। सार में ब्रह्मचर्य ही संसारी शक्तियों का मूल है। बिन ब्रह्मचर्य-व्रत पालन किए मनुष्य-जीवन नितांत शुष्क तथा नीरस प्रतीत होता है। संसार में जितने बड़े आदमी हैं, उनमें से अधिकतर ब्रह्मचर्य-व्रत के प्रताप से बड़े बने और सैंकड़ों-हजारों वर्ष बाद भी उनका यशगान करके मनुष्य अपने आपको कृतार्थ करते हैं। ब्रह्मचर्य की महिमा यदि जानना हो तो परशुराम, राम, लक्ष्मण, कृष्ण, भीष्म, ईसा, मेजिनी बंदा, रामकृष्ण, दयानन्द तथा राममूर्ति की जीवनियों का अध्ययन करो। जिन विद्यार्थियों को बाल्यावस्था में कुटेव की बान पड़ जाती है, या जो बुरी संगत में पड़कर अपना आचरण बिगाड़ लेते हैं और फिर अच्छी शिक्षा पाने पर आचरण सुधारने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु सफल मनोरथ नहीं होते, उन्हें भी निराश न होना चाहिए।

मनुष्य-जीवन अभ्यासों का एक समूह है। मनुष्य के मन में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक विचार तथा भाव उत्पन्न होते रहते हैं। क्रिया के बार-बार होने से उसमें ऐच्छिक भाव निकल जाता है और उसमें तात्कालिक प्रेरणा उत्पन्न हो जाती है। इन तात्कालिक प्रेरक क्रियाओं की, जो पुनरावृत्ति का फल है, 'अभ्यास' कहते हैं। मानवी चरित्र इन्हीं अभ्यासों द्वारा बनता है। अभ्यास से तात्पर्य आदत, स्वभाव, बान है। अभ्यास अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। हमारे मन में निरंतर अच्छे विचार उत्पन्न हों, तो उनका फल अच्छे अभ्यास होंगे और यदि बुरे विचारों में लिप्त रहे, तो निश्चय रूपेण अभ्यास बुरे होंगे। मन इच्छाओं का केंद्र है। उन्हीं की पूर्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना पड़ता है।

समाचार - सूचनाएं

- 16 जून महाराणा प्रताप जयंती। 18 जून रानी लक्ष्मीबाई जयंती। 21 जून योग दिवस ऑनलाइन तरीके से आर्य समाज आर्ष गुरुकुल में मनाया गया।
- 4 जुलाई स्वामी विवेकानन्द पुण्यतिथि।
- 19 जुलाई क्रांतिकारी मंगल पांडे जयंती।
- 23 जुलाई क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद जयंती।
- 23 जुलाई लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती।
- 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस।
- 29 जुलाई अमीचन्द भक्तराज पुण्यतिथि।
- 31 जुलाई अमर शहीद ऊधम सिंह स्मृति नमन।
- आंध्र प्रदेश में कैमिकल फैक्ट्री रिसाव में मारे गये, रेलवे लाइन पर प्रवासी मजदूरों के मारे जाने पर प्रार्थना सभा का आयोजन आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल में किया गया।
- गलवान घाटी में चीनी सैनिकों द्वारा भारत के वीर सैनिकों की शहादत पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा द्वारा शांतियज्ञ व विनम्र श्रद्धांजलि।

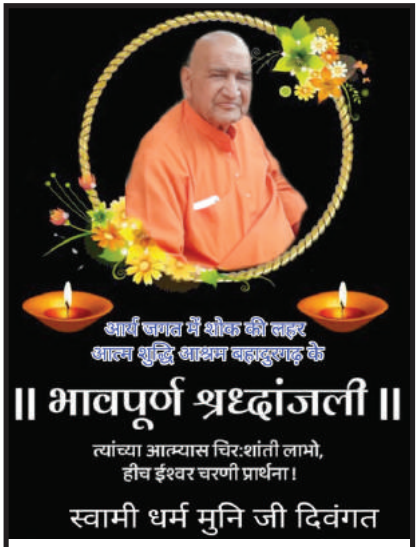

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन !!

- **प्रबंध सम्पादक**

आर्य जगत के सजग प्रहरी, ऋषि दयानन्द मिशन के सच्चे सिपाही, प्रचारक, विख्यात ऋषिभक्त संन्यासी स्वामी चैतन्य मुनि जी का 26-6-2020 को हृदयाघात होने से निधन हो गया। स्वामी जी के निधन से वेद प्रचार की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर स्वामी जी की आत्मा को सद्गति व शांति प्रदान करें। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

आर्यजगत को भारी क्षति! वैदिक विदुषी, समाजसेविका माननीय सदस्या इंदु रल्लन जी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों एवं हम सभी बंधु बांधवों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। "बिछड़ी कुछ इस अदा से कि रुत ही बदल गई, एक शख्स सारे घर को वीरान कर गई, इंदु रल्लन जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं, धरती पर मां सबसे अनमोल है कोई भी और कुछ भी हमारी प्यारी मां के शून्य को नहीं भर सकता। मां ही है जिन्होंने सभी मोतियों को एक सूत्र में माला की तरह पिरोया हुआ है। चाहे धरती से विदा ली हो तुमने लेकिन आज भी तुम हमारे दिल में जीवित हो मां!!" आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

आर्य जगत के प्रहरी, ऋषि दयानन्द मिशन के सच्चे सिपाही, प्रचारक, विख्यात ऋषिभक्त महाशय मामचन्द पथिक के आकस्मिक निधन की सूचना अत्यन्त दुःखद है । आज हमने एक लोकप्रिय भजनोपदेशक को खो दिया है । भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा परिवार को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति दें। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2020 को समाप्त होने वाला है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734**

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 20 तारीख तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रबंध संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।

3. लेख प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही लिया जायेगा।

5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ, कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य विषयों पर हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत के लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 7011279734
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

कालजयी रचना है 'सत्यार्थ-प्रकाश'

स्वामी दयानन्द ने देश में रूढ़ियों, कुरीतियों, आडम्बरों, पाखण्डों आदि से मुक्त एक नए स्वर्णिम समाज की स्थापना के उद्देश्य से 10 अप्रैल, सन 1875 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1932) को गिरगांव मुम्बई व पूना में 'आर्य समाज' नामक सुधार आन्दोलन की स्थापना की। 24 जून, 1877 (जेष्ठ सुदी 13 संवत् 1934 व आषाढ़ 12) को संक्राति के दिन लाहौर में 'आर्य समाज' की स्थापना हुई, जिसमें आर्य समाज के दस प्रमुख सिद्धान्तों को सूत्रबद्ध किया गया। ये सिद्धांत आर्य समाज की शिक्षाओं का मूल निष्कर्ष हैं। उन्होंने सन् 1874 में अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना की। वर्ष 1908 में इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया। इसके अलावा उन्होंने हिन्दी में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', 'संस्कार-विधि', 'आर्याभिविनय' आदि अनेक विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला', 'गोकरुणानिधि', 'व्यवाहरभानू' 'पंचमहायज्ञविधि', 'भ्रमोच्छेदल', 'भ्रान्तिनिवारण' आदि अनेक महान ग्रन्थों की रचना की। विद्वानों के अनुसार, कुल मिलाकर उन्होंने 60 पुस्तकें, 14 संग्रह, 6 वेदांग, अष्टाध्यायी टीका, अनके लेख लिखे। स्वामी दयानंद सरस्वती के तप, योग, साधना, वैदिक प्रचार, समाजोद्धार और ज्ञान का लोहा बड़े-बड़े विद्वानों और समाजसेवियों ने माना।

सजग रहें और जानिए कैसा है आपका

कोलेस्ट्रॉल

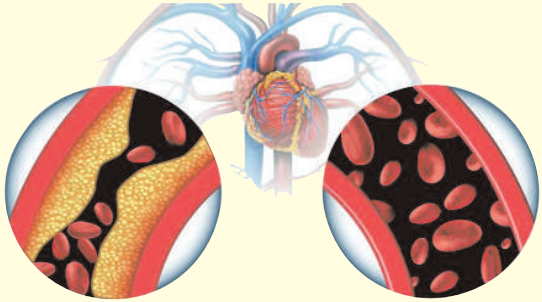

कोलेस्ट्रॉल की चर्चा होते ही आम आदमी के जेहन में एक भयपूर्ण आशंका पैदा हो जाती है। कोलेस्ट्रॉल के बारे में सजग और सतर्क रहना हमारे जीवन, हमारे हृदय के लिए बड़ा महत्वपूर्ण है।

कोलेस्ट्रॉल क्या है : मनाव जीवन के लिए अतिमहत्वपूर्ण यह मोम जैसा चिकना वसा पदार्थ है।

कोलेस्ट्रॉल का शरीर में क्या काम है: यह हमारी कोशिकाओं की दीवारों, विटामिनडी, बाइल जूस के साथ सेक्स हार्मोन्स के निर्माण में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जब कोलेस्ट्रॉल उपयोगी है तो खतरनाक क्यों माना जाता है : कोलेस्ट्रॉल का हमारे स्वस्थ्य जीवन के लिए बहुत बड़ा योगदान है किन्तु जब इसकी मात्रा हमारे शरीर की जरूरत से ज्यादा बढ़ जाती है तब यह हमारी धमनियों में इकट्ठा होकर ब्लाकेज पैदा करके हृदय को हानि पहुंचाता है इसके साथ ही कोलेस्ट्रॉल की बढ़ी हुई मात्रा मस्तिष्क, आंख, हृदय, गुर्दे लीवर आदि अंगों को नुकसान पहुंचाती है।

कोलेस्ट्रॉल की जांच कैसे होती है : कोलेस्ट्रॉल की जांच खून का नमूना लेकर लैब में लिपि प्रोफाइल के परीक्षण के लिए दिया जाता है। इस परीक्षण में टोटल कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड, एलडीएल, एचडीएल एवं वीएलडीएल की रिपोर्ट मिलती है।

कोलेस्ट्रॉल की जांच में कोई सावधानी रखनी पड़ती है : हां, लिपिड परीक्षण से पूर्व सन्ध्या पर सात्विक हल्का भोजन लें। तली मसालेदार भोजन जंक फूड फास्ट फूड चाट पूड़ी पराठे आदि लिपिड परीक्षण के पूर्व संध्या पर बिल्कुल न लें अन्यथा परीक्षण रिपोर्ट भ्रमित कर सकती है। लिपिड जांच के लिए रक्त देते समय 12 घण्टे पूर्व में कुछ भी न खाएं न पिएं यहां तक कि चाय भी नहीं। बारह घंटे की फास्टिंग के बाद ही परीक्षण कराएं।

कोलेस्ट्रॉल जीवन की डोर को हिला न दे, इसके लिए क्या सावधानी : सेहत के प्रति जिम्मेदार बनें। रक्तचाप 120-80 mm/Hg, रक्त क्लूकोज भोजन के दो घण्टे बाद 100-140 के मध्य रहे, मोटापा बढ़ने न दें, बीएमआई 25 से कम रखें। किसी प्रकार का नशा धूम्रपान शराब चाय काफी कोल्डड्रिंक से दूरी बनाए अपने टोटल कोलेस्ट्रॉल को 150 mg/dl, खराब कोलेस्ट्रॉल एलडीएल को 100 mg/dl तथा अच्छा मित्र कोलेस्ट्रॉल एच.डी.एल. की मात्रा 50-80 mg/dl के स्तर पर रखे। क्षारीय अहार लें, सेंधा नमक का प्रयोग और किसी भी प्रकार के रिफाइंड खाद्य तेल का प्रयोग बंद कर दें, बिना रिफाइंड कोल्हू का लाही का तेल, अलसी, तिल का तेल सर्वश्रेण्ठ है किन्तु बिना रिफाइण्ड मूंगफली, पीली सरसों का तेल भी अच्छा माना जाता है।

क्या आहार में सावधानी रखनी चाहिए : बढ़े कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए कम से कम 40-50 gms फाइवर लें। पैकिंग वाले गेहूं के आटे में फाइवर न के बराबर होता है पत्तेदार सब्जी एक कटोरा भरकर सेवन करें। भोजन में कार्बोहाइड्रेड 40-50% फैट 5-6% प्रोट्रीन 15-18% उचित होती है। तीन श्वेत विष चीनी, मैदा व नमक का सेवन न्यूनतम करें। गाजर का रस, आवत बढ़े कोलेस्ट्रॉल को घटाते है वहीं ताजा एलोवेरा और तुलसी पत्र का सेवन एलडीएल को कुछ ही हफ्तों में सामान्य कर देती है।

कितनी मात्रा आदर्श और सुरक्षित है

रक्त में कुल कोलेस्ट्रॉल 200 मिलीग्राम/डेसीलीटर को सामान्य माना जाता है किन्तु मेरी धारणा है कि स्वस्थ्य व्यक्ति में इसकी मात्रा 150 मिलीग्राम/डेसीलीटर से अधिक न होने पाए। ट्राईग्लिसराइड के 150 मिलीग्राम/डेसीलीटर आदर्श मानते है किन्तु इसे भी 100 मिलीग्राम से ज्यादा हितकारी है। एलडीएल यानी खराब कोलेस्ट्रॉल को चिकित्सक 100 से 130 मिलीग्राम/डेसीलीटर को सामान्य मानते हैं किन्तु मैं 10 मिलीग्राम/डेसीलीटर एलडीएल से कम को आदर्श मानता हूं। एचडी. यानी अच्छा कोलेस्ट्रॉल को 50 मिलीग्राम/डेसीलीटर श्रेष्ठ मानते हैं किन्तु यह कुल कोलेस्ट्रॉल का चौथाई भाग होना चाहिए और सामान्यतः 70-80 मिलीग्राम/डेसीलीटर एचडीएल दीर्घकालीन रोगों से बचाव का एक प्रभावशाली उपाय है। वीएलडीएल बैरी लो डेन्सिटी लाइपोप्रोटीन खतरनाक कोलेस्ट्रॉल है जो कि चीकट होता है इसकी मात्रा 25-30 मिलीग्राम/डेसीलीटर के सामान्य माना जाता है किन्तु यह न्यूनतम होना चाहिए।

ओ३म्

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किन्चित परं स्मृतम्॥

गौएं स्वर्ग की सीढी होती हैं, गौएं स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं, उनसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

कीर्तिनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्व पापहरं शिवम्॥

गायों के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गायों का दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है और उनसे सम्पूर्ण पापों का नाश तथा परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ओउम् गां मां हिन्सी। गवो भगो गाव इन्द्रो में॥ वेद

महाकल्याणकारी गौमाता को मत मारो। उनका दूध, गोबर, मूत्र हमारा भाग्य है और ऐश्वर्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

तृणोदकादि संयुक्तं यः प्रद्धात् गवान्हिकम्।
सोऽश्मेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः॥

जो गौओं को प्रतिदिन जल तृण सहित भोजन प्रदान करता है। उसे अश्वमेध यज्ञ के बराबर का पुण्य प्राप्त होता है। इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

यत्र गावस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

जहां गौओं की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

गाष्च शुश्रुषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानापि सुदुर्लभान्॥

जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उस पर संतुष्ट होकर गौएं उसे अतिउत्तम वर प्रदान करती हैं।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Date of Dispatch 12&13 Every Month

श्री कृष्ण धर्मपत्नी रूक्मणी जी
के साथ यज्ञ करते हुए

श्री राम धर्मपत्नी सीताजी
के साथ यज्ञ करते हुए

मनुष्य जीवन के लिए अत्यावश्यक पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ (हवन)

हम सबके प्रेरणा पुरुष योगीराज श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी भी यज्ञ करते थे। आओ हम सब उनका अनुसरण करें। ध्यान रहे विधिपूर्वक किया गया यज्ञ ही लाभकारी होता है। यदि यज्ञ में घी, समिधा-लकड़ी और सामग्री का अनुपात ठीक न हो तो लाभ नहीं होगा, हानि की भी सम्भावना है, क्योंकि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अतः हम सब पर्यावरण शुद्धि के लिए विधिपूर्वक यज्ञ अवश्य करें। जिस प्रकार पेट्रोल आदि जलकर वायु प्रदूषित करते हैं उसी प्रकार सुगंधित सामग्री और घी आदि के जलने से वायु शुद्ध होती है, अतः अपने घर में रोजाना यज्ञ-हवन अवश्य करें।।

ओ३म् **विश्ववारा संस्कृति** ओ३म्

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221